कुरान

एक प्रश्न

जमाअते-इस्लामी की मान्यताओं पर स्वतन्त्र
एवं निष्पक्ष, विचार प्रधान लेखों
का अद्वितीय संग्रह !

लेखक :—
धर्मपाल गुप्त 'शलभ'

दो शब्द

श्री धर्मपाल गुप्त 'शलभ' जब इन लेखों को लिख रहे थे उस समय मैंने इन्हें पढ़ा था। 'क्रान्ति' के उत्तर में प्रकाशित इन लेखों के सदर्भ में लेखक और मेरे बीच विचार विमर्श भी होता था। मैंने सदैव ही लेखक को इस बात का सुझाव दिया कि इनका आधार केवल दार्शनिक और तार्किक हो। भावावेश के द्वारा किसी की धार्मिक भावनाओं को ठेस नहीं पहुंचना चाहिये। उस समय इन लेखों को पढ़ कर मुझे बेहद खुशी हुई थी क्योंकि श्री 'शलभ' ने निष्पक्ष रूप से इस्लामी मान्यताओं पर अपने विचार प्रकट किये थे। मेरा विश्वास है कि यह पुस्तक हिन्दु-मुस्लिम शिक्षित समुदाय के लिये लाभकारी सिद्ध होगी क्योंकि आज के युग में जिस तीव्रता से वैचारिक क्रान्ति हो रही है, उससे रूढ़िवादिता और अन्ध-विश्वासों का समाप्त होना स्वभाविक है।

पुस्तक के संदर्भ में :-

इस पुस्तक के लिखने का एक इतिहास है। लगभग पन्द्रह वर्ष पूर्व मेरे हृदय में इस्लाम को मूल रूप से पढ़ने और समझने की इच्छा उत्पन्न हुई थी। सौभाग्य से, उन दिनों मेरे निवास स्थान के निकट ही गन्दा नाला पर जमाअते-इस्लामी का कार्यालय एवं पुस्तकालय था। मौलाना यूसुफ इस्लाही साहब इस संस्था के स्थानीय अमीर-जमाअत (उच्च पदाधिकारी) थे। उनसे परिचय हुआ तो उन्होंने मुझे अपने पुस्तकालय से इस्लाम धर्म सम्बन्धी अनेक ग्रन्थ पढ़ने को दिये। यह ग्रन्थ मूलतः अंग्रेजी और हिन्दी में थे। कुछ पुस्तकें उर्दू भाषा की भी पढ़ने को मिलीं। इन सभी पुस्तकों के लेखक थे, मौलाना अबूआला मौदूदी साहब। मौलाना मौदूदी इन दिनों पाकिस्तान में जमाअते-इस्लामी के शीर्षस्थ नेता हैं। भारत विभाजन से पूर्व, वह सन्युक्त भारत में इस संस्था में प्रणेता एवं नेता रहे हैं। उन्होंने काफी पुस्तकें लिखीं हैं जिनमें अंग्रेजी की दो पुस्तकें What is Islam और Towards understanding Islam काफी लोकप्रिय रही हैं। इनकी पुस्तकों का प्रकाशन लाहौर से भी हुआ है और भारत में रामपुर स्थित मक्तबा जमाअते-इस्लामी ने भी कुछ ग्रन्थों का प्रकाशन किया है।

मौलाना मौदूदी की कई पुस्तकें पढ़ने के पश्चात मेरी इच्छा पवित्र कुरान शरीफ को पढ़ने की हुई। उस समय तक इस महान ग्रन्थ का हिन्दी एवं अंग्रेजी अनुवाद जमाअते-इस्लामी ने प्रकाशित नहीं किया था। मेरी इच्छा को देखकर स्थानीय जमाअते-इस्लामी के रुकन (प्रमुख सदस्य) तथा बड़ा बाजार स्थित कौमी कुतुबखाना के संचालक हाफिज साहब ने मुझे पवित्र कुरान शरीफ का हिन्दी संस्करण दिया जिसका अनुवाद

फिरंगीमहल लखनऊ के विद्वान, अहमद बशीर साहब एम. ए. ने किया था। सरल एवं सुबोध हिन्दी भाषा में किया गया यह अनुवाद मुझे बेहद पसन्द आया। यद्यपि हाफिज साहब इस अनुवाद से शतप्रतिशत सहमत नहीं थे तथापि अन्य अनुवादों की तुलना में उन्होंने इस अनुवाद को काफी हद तक बेहतर समझा था।

पवित्र कुरान शरीफ को कई बार आद्योपान्त पढ़ा। जितनी बार पढ़ता था उतनी ही बार मन में अनेक प्रश्न और शंकायें जन्म लेती थीं। शंका समाधान के लिये मैंने मौलाना यूसुफ इस्लाही साहब और हाफिज साहब से कई बार विनम्र निवेदन किया किन्तु यह सज्जन सदैव ही मेरी उत्सुकता को टालते रहे। उनका कहना था कि, पवित्र कुरान शरीफ निश्चितरूप से ईश्वरीय वाणी है। इसे श्रद्धा और विश्वास के साथ पढ़ना चाहिये। ईश्वरीय वाणी में शंका और प्रश्न का स्थान नहीं है। मैं अपनी इन शंकाओं को अपने अन्य मुसलमान मित्रों के सामने रखता और समाधान चाहता किन्तु कोई भी कुरान शरीफ पर वैचारिक एवं दार्शनिक दृष्टि से विचार करने को तैयार न होता। ऐसी स्थिति में मेरा मन घुट कर रह जाता था।

उक्त संदर्भ में जमाअते-इस्लामी के बारे में दो शब्द कहना आवश्यक समझता हूं। इस संस्था की सदस्य संख्या भारत में अधिक नहीं है। सम्प्रति लगभग २५०० सदस्य संख्या वाली इस सस्था की संगठनात्मक शक्ति अच्छी है। इसके पास प्रचार के पर्याप्त साधन हैं तथा जमाअत के नेता एव कार्यकर्त्ता पूर्ण निष्ठा के साथ इस्लाम धर्म के प्रचार एवं प्रसार में लगे हैं। जमाअते-इस्लामी अपने ढंग से अमुस्लिम जनता की भ्रान्तियों का निराकरण करना चाहती है किन्तु इसके लिये लम्बी बहस में पड़ना नहीं चाहती। इसी आधार पर जमाअते-इस्लामी का मुख-पत्र साप्ताहिक 'कान्ति' अमुस्लिम जनता के समक्ष इस्लाम धर्म की महानता को सिद्ध करता रहा है। सन १९६९ में 'कान्ति' ने वेद और कुरान

शरीफ में वर्णित एकेश्वरवाद पर कतिपय विद्वानों के लेख प्रकाशित किये। इन लेखों का उद्देश्य पवित्र कुरान शरीफ को एकेश्वरवाद पर आधारित परमात्मा की अन्तिमवाणी दर्शाना था। जनाब हाफिज साहब ने 'कान्ति' की यह प्रतियां मेरे मित्र एवं प्रसिद्ध कवि पंडित होरी लाल शर्मा 'नीरव' को इस आशय से भेंट कीं कि यदि, उनकी वेदों में वर्णित एकेश्वरवाद के सम्बन्ध में कुछ जानकारी हो तो वह इसे 'कान्ति' में प्रकाशनार्थ भेजें। 'नीरव' जी ने 'कान्ति' में उठाये गये इस प्रसंग पर कुछ लिखना अनावश्यक समझा तथा वह प्रतियां मुझे पढ़ने को दीं। 'कान्ति' में प्रकाशित लेखों को पढ़ कर मेरी इच्छा हुई कि इसी प्रकार के प्रसंग पवित्र कुरान शरीफ के सम्बन्ध में भी उठाये जाने चाहिये। मैं जानता था कि 'कान्ति' पवित्र कुरान शरीफ के सम्बन्ध में शंकाओं को प्रकाशित कदापि नहीं करेगा। ऐसी स्थिति में किसी अन्य साप्ताहिक पत्र का सहारा तलाश किया गया। सौभाग्य से उन दिनों बरेली नगर से 'बरेली समाचार' धूमधाम से प्रकाशित होता था। इसके सम्पादक श्री रामदयाल भार्गव मेरे मित्र थे। मैंने जब उनसे कहा कि मैं अपने कुछ लेख आपके पत्र में प्रकाशित कराना चाहता हूँ तो उन्होंने इसे सहर्ष स्वीकार कर लिया। फलतः 'कान्ति' के उत्तर में मेरे ९ लेख बरेली समाचार में सन १९६९ में नियमित रूप से प्रकाशित हुये। प्रकाशित लेख श्री भार्गव द्वारा कान्ति के सम्पादक तथा स्थानीय जमाअते-इस्लामी के नेताओं के पास भेजे जाते रहे ताकि वह इनके उत्तर में अपने विचार प्रकाशनार्थ भेजें। दुर्भाग्य से किसी ओर से मेरे लेखों का प्रतिकार नहीं हुआ। प्रस्तुत पुस्तक में वही लेख छापे गये हैं।

आपात्त स्थिति के काल में जमाअते-इस्लामी पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया था। इसके नेताओं और कार्यकर्त्ताओं को जेलों में बन्द रखा गया था। इसके बावजूद जमाअते-इस्लामी पहिले भी और आज भी हिन्दु-मुस्लिम एकता पर बल देती रही है। उसका विश्वास है कि संसार की समस्त मनुष्य जातियां, आदि पैगम्बर हजरत आदम अलैहिस्सलाम की

सन्तानें हैं जिन्हें परस्पर विद्वेष की बजाय प्रेम का व्यवहार करना चाहिए। इस प्रेम का आधार है एकेश्वरवाद में विश्वास करना। जमाअते-इस्लामी के अनुसार यदि समस्त भारतवासी सर्वप्रथम एकेश्वरवाद को हृदय से स्वीकार कर लें तो विद्वेष की खाई स्वतः समाप्त होती चली जायगी। ऊपर से देखने पर यह बातें काफी मोहक एवं रोचक लगती हैं। किन्तु इनकी गहराइयों में कितना इस्लामी अन्तरविरोध छिपा है, इसका अनुमान पवित्र कुरान शरीफ के पढ़ने से ही प्रकट हो सकता है। जमाअते-इस्लामी के ध्येय के अनुसार संसार में 'हकूमते-इलाहिया'—अल्लाह का शासन होना चाहिये। इसका अर्थ है कि, ईश्वर की अन्तिम वाणी पवित्र कुरान शरीफ के ही आधार पर व्यवस्था और राज्य का संचालन हो। यह सब कैसे और किस प्रकार सम्भव होगा, इन्हीं बातों पर मैंने अपने लेखों में प्रकाश डाला है।

एक ताजा उदाहरण देना आवश्यक समझता हूँ। अखिल भारतीय जमाअते-इस्लामी के मन्त्री मौलाना सैय्यद हामिद हुसैन साहब कुछ मास पूर्व बरेली पधारे। स्थानीय पत्रकारों से उन्होंने भेंट की तथा खुलकर अपने विचार प्रकट किये। इस वार्ता में मेरे साथ श्री रामदयाल भार्गव भी थे। सैय्यद साहब ने स्पष्ट किया कि भारत के मुसलमान देशप्रेमी हैं, न कि देश भक्त। देशप्रेम और देश भक्ति का अन्तर स्पष्ट करते हुये उन्होंने साफ कहा कि, मुसलमानों की देशभक्ति उसी देश के प्रति हो सकती है जहां पवित्र कुरान शरीफ के आधार पर व्यवस्था और राज्य स्थापित हो। ईश्वर के स्थान पर मनुष्य निर्मित व्यवस्था एवं राज्य को भक्तिभावना से स्वीकार नहीं किया जा सकता। अलबत्ता भारतवर्ष हमारी मातृ-भूमि है और हम इसे इतना ही प्रेम करते हैं जितना कि एक हिन्दु भाई करता है। उक्त सदर्भ में जमाअते-इस्लामी के राष्ट्रीय चरित्र को समझने में पवित्र कुरान शरीफ से काफी सहायता मिलती है। इस पुस्तक को प्रकाशित करने का मेरा यही उद्देश्य है।

बरेली जुलाई १९७८ —धर्मपाल गुप्त 'शलभ'

समर्पण

अपने मित्र मौलाना युसुफ इस्लाही साहब

को जिन्होंने मेरी शंकाओं का

समाधान करने से

हमेशा परहेज

किया ।

(वस्सलाम व रहमतुल्ला बरकतोहू)

—धर्मपाल गुप्त 'शलभ'

— विषय —

१- वेदों में शिर्क

२- कुरान और शिर्क

३- क्या कुरान ईश्वरीय ग्रन्थ है ?

४- कुरान दर्शन

५- ह० मोहम्मद साहब सल्ल०

६- कुरान और राजनीति

७- इस्लाम और सत्यधर्म

८- इस्लाम और आखिरत

९- जमाअते-इस्लामी और राष्ट्रीयता

वेदों में शिर्क

पिछले दिनों जमाअते-इस्लामी के मुखपत्र हिन्दी साप्ताहिक 'कान्ति' में एक लेख प्रकाशित हुआ था जिसका शीर्षक था–"क्या वेदों में शिर्क है।" शिर्क अरबी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है—सम्मिलित करना। अभिप्राय यह कि ईश्वर की सत्ता में किसी अन्य शक्ति को सम्मिलित करना। इस्लामी दृष्टिकोण से बहुदेववाद, अनेकेश्वरवाद तथा मूर्तिपूजा शिर्क कहलाते हैं जिन्हें गुनाहे-अजीम (महान पाप) कहा जाता है। मौलाना सैय्यद हामिद अली ने इस लेखमाला का श्रीगणेश उपरोक्त पत्र में इस उद्देश्य से किया था कि वह यह सिद्ध कर सकें कि संसार में केवल कुरान ही एक ऐसी ईश्वरीय पुस्तक है जिसमें शिर्क का कोई स्थान नहीं है। उन्होंने हिन्दुओं के आदि ग्रन्थ वेदों में शिर्क खोजने का प्रयत्न किया था जिसमें एक उद्देश्य निहित लगता है। इस्लाम के अनुयाइयों का यह विश्वास है कि ईश्वर ने सर्वप्रथम हजरत आदम अलेहिसलाम (आदि मानव और आदि पैगम्बर-अर्थात ईश्वरदूत)से लेकर हजरत मोहम्मद साहब सल्ल० (इस्लाम धर्म के मूल प्रवर्तक तथा अन्तिम ईश्वरदूत) तक पृथ्वी के प्रत्येक भाग एवं जाति में लगभग एक लाख चौबीस हजार पैगम्बर (ईश्वरदूत) उतारे। कुरान में यद्यपि इन समस्त ईश्वरदूतों की पूरी सूची नहीं मिलती फिर भी अनुमान है कि भारत में भी अवश्य कोई पैगम्बर उतारे गये होंगें। कुरान के आधार पर मुसलमानों का विश्वास यह भी है कि उपरोक्त पैगम्बर प्रकृति धर्म इस्लाम का प्रचार करने के उद्देश्य से ही भेजे गये थे क्योंकि अल्लाह (ईश्वर) ने मनुष्यों के लिये इस्लाम धर्म को स्वयं पसन्द किया है।

"...हमने तुम पर अपना अहसान पूरा कर दिया और हमने तुम्हारे लिये दीन इस्लाम को पसन्द किया...।"

(कुरान, सूरे मायदा)

मुसलमान यह भी विश्वास करते हैं कि हजरत मोहम्मद साहब सल्ल० तक जितने पैगम्बर उतारे गये, सब ने एकेश्वरवाद की ही तबलीग (प्रचार) की। इन पैगम्बरों पर छोटे-छोटे सहीफे (संक्षिप्त ईश्वरीय वाणी) फरिश्तों के माध्यम से परमेश्वर भेजता रहा था जिनमें आदेश था कि सब मनुष्य केवल अल्लाह को ही पूजें तथा शिर्क (मूर्ति पूजा आदि) से दूर रहें। मुसलमानों का कहना है कि आगे चलकर मनुष्यों ने पैगम्बरों द्वारा प्रचारित ईश्वरीय आदेशों के विरुद्ध शिर्क करना आरम्भ कर दिया तथा संकलित ईश्वरीय वाणी में मनचाही हेर-फेर करके स्वयं को पथभ्रष्ट कर लिया। मुसलमानों के अनुसार केवल कुरान ही एक अति विश्वसनीय ऐसा पवित्र ग्रन्थ है जिसमें कोई हेर फेर नहीं हुआ है तथा इसमें आद्योपान्त तौहीद (एकेश्वरवाद) की ही शिक्षा दी गई है।

उपरोक्त विश्वासों के आधार पर मौलाना हामिद अली साहब के लेख प्रकाशित करने का उद्देश्य यही है कि वह यह सिद्ध कर सकें कि हिन्दुओं के आदि ग्रन्थ वेद सम्भवतः किसी काल में ईश्वरीय वाणी के रूप में रहे होंगें किन्तु पश्चात में इनमें शिर्क उत्पन्न कर देने से इन्हें एकेश्वरवादी प्रकृति धर्म का ज्ञान भण्डार नहीं कहा जा सकता। मौलाना साहब ने अपने विश्वास की पुष्टि के लिये लिखा कि–"केवल राजा राम-मोहन राय तथा स्वामी दयानन्द सरस्वती को छोड़कर अधिकांश विद्वान वेदों में शिर्क ही पाते हैं।" (कान्ति, २७ मई ६९)

मौलाना साहब के सम्पूर्ण लेख को पढ़ने से लगता है कि उन्होंने स्वयं वेदों का अध्ययन नहीं किया है। केवल सुनी सुनाई बातों के आधार पर ही वेदों में शिर्क होने की धारणा बना ली है। हर व्यक्ति को हर धर्म के ग्रन्थों को पढ़ने और समझने का अधिकार है। मौलाना साहब ने वेदों में शिर्क और तौहीद को खोजने का प्रयास किया है। यह एक अच्छी बात है किन्तु जिस भावना और उद्देश्य से पूर्व निर्धारित विचारधारा के आधार पर केवल शिर्क ही शिर्क खोजने का प्रयत्न किया गया है, वह स्वस्थ परम्परा नहीं कही जा सकती। वेदों अथवा किसी भी ग्रन्थ पर विचार

प्रकट करने से पूर्व, लेखक को उन ग्रन्थों का भली प्रकार अध्ययन करना चाहिये। खेद है कि मौलाना साहब ने बिना परिश्रम किये ही हिन्दुओं के आदि ग्रन्थ वेदों पर टीका टिप्पणी की है। सबसे अधिक आश्चर्य तो यह है कि उन्होंने अपने तत्सम्बन्धी अज्ञान को इसी लेख में स्वीकारा भी है। वह कहते हैं—"वेदों में क्या है, इसे हम मुसलमान तो क्या जानें, वेदों के गिने चुने विद्वानों के सिवा अच्छे अच्छे शिक्षित हिन्दू भी नहीं जानते।"

मौलाना साहब के उपरोक्त खयालात का वेदों के आधार पर उत्तर देना कम से कम मेरे जैसे व्यक्ति के लिये कठिन है। मैंने न तो वेदों का विधिवत अध्ययन किया है और न ही स्वयं को इस योग्य पाता हूं कि वेद मन्त्रों का अर्थ करके उनके वास्तविक भावों को स्वतन्त्र रूप से समझ सकूं। वैसे महर्षि दयानन्द सरस्वती की ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, नरदेव शास्त्री का ऋग्वेदालोचन तथा श्रीकृष्ण चन्द्र विद्यालंकार और वेदमूर्ति श्री सातवलेकर जी के भाष्यों को पढ़ने का अवसर मुझे मिला है। स्पष्ट है कि इन सभी महाविद्वानों ने वेदों में एकेश्वरवाद को ही प्रकटाया है। शिर्क या मूर्तिपूजा नाम की कोई उपासना पद्धति वेदों में नहीं मिलती। अलबत्ता सांयणाचार्य ने जो वेदभाष्य किया है उसमें बहुदेववाद को ही प्रकट किया किया है। अद्वैतवादी दर्शन ही बहुदेववाद, अनेकेश्वरवाद और मूर्तिपूजा के रूप में विकसित हुआ, इसमें दो मत नहीं किन्तु हम अपने पूर्वाग्रह के आधार पर, इसे शिर्क अर्थात गुनाहे अजीम मानकर, अपनी विचारधारा को बिना तर्क के एकेश्वरवादी समझते रहें, यह उचित न होगा। मौलाना साहब को समझना होगा कि शिर्क और तौहीद (मूर्तिपूजा और एकेश्वरवाद) पूर्वाग्रह के प्रश्न नहीं हैं वरन इनका सम्बन्ध मनुष्य की कल्पना और भावना से रहा है। मनुष्य ने जिस रूप से परमेश्वर की कल्पना की उसी प्रकार की पूजा पद्धति को उसने जन्म दिया। इस्लाम यदि शिर्क को गुनाह समझता है तो उसके पीछे दार्शनिक युक्ति होना आवश्यक है। उसे सिद्ध करना होगा कि शिर्क का मार्ग किन तर्कों के आधार पर गलत ठहरता है। केवल यह मानकर कि हमारे धर्म में परमात्मा और उसके पैगम्बरों

ने शिर्क को गुनाह बताया है इसलिये शिर्क का मार्ग गलत है, कहने से हम भिन्न मार्ग के अनुयायियों को सन्तुष्ट नही कर सकते। मौलाना साहब ने वेदों में शिर्क घोषित करने का प्रयत्न स्पष्टतया इसी उद्देश्य से किया है कि वह अमुस्लिम (हिन्दू) जनता को यह आभास करा सकें कि केवल कुरान में ही एकेश्वरवाद है क्योंकि इसमें अल्लाह ने केवल एक खुदा को ही पूजने का आदेश दिया है। इसके विपरीत वेदों में शिर्क है जिस कारण यह न तो ईश्वरीयवाणी सिद्ध होते हैं और न ही माननीय हैं। वेदों में वस्तुतः एकेश्वरवाद है या नहीं, यह वाद-विवाद का विषय है। आर्यसमाजी और सनातनी बन्धुओं में इस पर काफी विवाद हुआ है और होता रहेगा किन्तु मौलाना साहब ने इस प्रश्न से उलझ कर, स्वयं को ऐसी स्थिति में ला खड़ा किया है जहां उन्हें भी इस प्रश्न का उत्तर देना होगा कि "क्या कुरान में भी शिर्क है ···"?

कुरान और शिर्क दो विरोधी बातें हैं—ऐसा सब इस्लाम धर्मानुयायी विश्वास करते हैं। कुरान शरीफ में परमेश्वर फरमाता है;—

"···कहो कि अल्लाह एक है, न कोई उससे पैदा हुआ, न वह किसी से पैदा हुआ और न कोई उसकी समता का है···"

(कुरान, सूरे इखलास)

मौलाना साहब उपरोक्त कलामे-रब्बानी (ईश्वरीय वाणी) के आधार पर अल्लाह को वाहिद (एक) मानते हैं। परमेश्वर के लिये यह भी कहा गया है कि वह वाहिदुल्लाशरीक (जिसका कोई शरीक न हो) है तथा केवल उसी के आगे सिज्दा (दण्डवत) करना चाहिये। यह बातें एकेश्वरवाद की परिचायक अवश्य हैं किन्तु जब उसी स्थान पर इसके विरोध में दूसरी बातें कही गयी हों तो आश्चर्य होना स्वाभाविक है। यह सत्य है कि मौलाना साहब खुदा को वाहिद (एक) मानते हैं। किन्तु केवल ऐसा मान लेने भर से ही तौहीद (एकेश्वरवाद) का ढिंढोरा नहीं पीटा जा सकता। परमेश्वर की हस्ती को एक मानने के साथ साथ, जब तक हम उसकी शक्ति

और गुणों को भी अद्वितीय रूप में नहीं देखेंगे तब तक तौहीद का प्रश्न हल न हो सकेगा। परमेश्वर को केवल गणना में ही एक नहीं माना जाना चाहिये वरन उसकी सर्वशक्तिमत्ता को भी अद्वितीय स्वीकार करना होगा। इस तर्क के आधार पर पवित्र वाणी कुरान में परमात्मा अपने स्वरूप को जिस प्रकार से प्रकटाता है उससे वह गणना में भले ही एक कहा जाय किन्तु शक्ति, गुण और समता में अद्वितीय नहीं कहा जा सकता।

कुरान के अनुसार परमात्मा अनादि, अनुपम, अजन्मा और सर्व-शक्तिमान है। यदि परमात्मा गणना में एक है तो इन गुणों में भी एक ही होना चाहिए। इस युक्ति के आधार पर जब हम पवित्र ईश्वरीय वाणी कुरान का अध्ययन करते हैं तो लगता है कि उसमें परमात्मा के गुणों की समता रखने वाली कुछ और भी शक्तियां हैं, जिनके अस्तित्व को स्वीकार करने का अर्थ एकदम शिर्क हो जाता है। उदाहरण के लिये अल्लाह ने सृष्टि संचालन के हर कार्य के लिये कुछ फरिश्ते नियुक्त कर रखे हैं। जमीन और आसमान के समस्त कार्य को सम्पन्न करने के साथ-साथ मनुष्यों के प्राण निकालना तथा पैगम्बरों (ईश्वर दूतों) पर ईश्वरीय वाणी को पहुंचाने का कार्य भी परमात्मा ने फरिश्तों को सौंप रखा है। फरिश्तों के महत्व को कुरान इस प्रकार प्रकट करता है :—

'बेशक यह (कुरान) एक प्रतिष्ठित फरिश्ते का पैगाम है। अर्श (आकाश) के मालिक के नजदीक उसका बड़ा रुतबा है। सरदार और अमानतदार है।.....और बेशक उन्होंने उस (जिब्राईल फरिश्ता) को साफ आसमान में देखा .....'।

(कुरान ...सूरे इन्फितार)

पवित्र वाणी कुरान से है स्पष्ट कि सृष्टि संचालन का समस्त कार्य परमात्मा के आदेश से फरिश्ते ही करते हैं। परमात्मा स्वयं कर्त्ता न होकर सहकर्त्ताओं पर ही निर्भर करता है। उसका काम केवल आदेश देना भर है। फलतः हम इस परिणाम पर पहुंचते हैं कि परमात्मा की

सक्रियता के लिये आदेश पालक फरिश्तों के अस्तित्व में भी विश्वास किया जाय और यदि परमात्मा अनादि है तो हमें फरिश्तों को भी अनादि मानना होगा। अन्यथा फरिश्तों के अभाव में परमात्मा निष्क्रिय स्थिति में हो जायगा। परमात्मा की अनादि सत्ता के मुकाबले में फरिश्तों के अस्तित्व को भी अनादि मानकर क्या हम ईश्वरीय गुणों में भी एकेश्वरवादी होने का दावा कर सकते हैं? सर्वशक्तिमान परमेश्वर यदि सृष्टि संचालन के कार्यों में दूसरों को भागीदार बनाता है तो क्या वह उसकी सर्वशक्तिमत्ता के होने की दलील मानी जा सकती है? मौलाना साहब को इन प्रश्नों का उत्तर देना होगा और बताना होगा कि गुणों में परमात्मा की समता करना शिर्क है या नहीं?

'.....लोगो! अपने पालन कर्ता की पूजा करो जिसने तुमको और इन लोगों को जो तुमसे पहिले हो गुजरे हैं पैदा किया.....।'

(कुरान सूरे बकर)

निश्चय ही यदि परमात्मा संसार का एक मात्र पालक है तो हमें केवल उसी अल्लाह की पूजा करना चाहिये, किसी अन्य की नहीं। अल्लाह तो कुरान में हर स्थल पर यही आदेश देता है कि सिज्दा (दण्डवत) खुदा के लिये ही होना चाहिये। अन्य को सिज्दा करना या उसकी पूजा करना पूरी तरह शिर्क माना गया है।

उपरोक्त कथन के आधार पर जब हम कुरान के अन्य पृष्ठों को खोलते हैं तो बात कुछ और ही नजर आती है। परमात्मा ने जब हजरत आदम (आदि मानव) का पुतला बनाया और जब उसमें अपनी रूह फूंक दी तो फरिश्ते से कहा कि तुम इस आदम (आदि मानव) को सिज्दा (दण्डवत) करो।

".....तो जब मैं उसे पूरा कर लूं और अपनी रूह उसमें फूंक दूं तो तुम उसके आगे सिज्दे में गिर पड़ना। चुनांचे सब ही फरिश्तों ने उसे सिज्दा किया।"

(कुरान सूरे साद)

प्रश्न उठता है कि परमात्मा स्वयं ही अपने आदेश के विरुद्ध किसी अन्य शक्ति को सिज्दा करने की आज्ञा किस उद्देश्य से देता है ? यदि परमात्मा एक है तो उसका आदेश भी सर्वकालीन एक सा ही होना चाहिये। परमात्मा के अतिरिक्त किसी दूसरी शक्ति को सिज्दा करने की आज्ञा देना, एक ऐसा शिर्क है जिसकी प्रेरणा स्वयं खुदा दे रहा है। मौलाना सैय्यद हामिद अली इसे शिर्क कहेंगे या नहीं यह जानने के लिये तर्क और दर्शन सदैव उनके सामने प्रश्न वाचक चिन्ह खड़ा करता रहेगा।

अन्त में, मैं निवेदन करना चाहूंगा कि इस लेख का उद्देश्य किसी प्रकार भी मनोमालिन्य तथा विद्वेष उत्पन्न करना नहीं है। मौलाना साहब मेरे द्वारा उठाये गये प्रश्नों के उत्तर देकर शंका समाधान करेंगे, ऐसा विश्वास है।

—०—

कुरान और शिर्क

भारतीय जमाअते-इस्लामी तथा उसके नेता सय्यद मौलाना हामिद अली साहब का विश्वास है कि संसार में केवल कुरान ही एक ऐसा महान पवित्र ग्रन्थ है जिसमें सर्वत्र एकेश्वरवाद की ही दुहाई दी गई है। कुरान के अतिरिक्त अन्य धर्मानुयाइयों के जितने भी ग्रन्थ उपलब्ध हैं वह न तो ईश्वरीय हैं और न ही एकेश्वरवाद के द्योतक। मौलाना साहब का विश्वास यह भी है कि कुरान का एक-एक हरुफ परमात्मा का है जिसे जिब्राईल नामक एक प्रमुख फरिश्ते के माध्यम से अन्तिम ईश्वरीय सदेश-वाहक हजरत मोहम्मद साहब सल्ल० पर उतारा गया था। पवित्र ईश्वरीय वाणी कुरान का एक-एक शब्द और अक्षर किसी भी मानवीय हस्तक्षेप से पूर्णतया सुरक्षित रहा है जबकि यहूदी, ईसाई तथा अन्य धर्मों के ग्रन्थों में ईश्वरीय वाणी सुरक्षित नहीं रह सकी है। मौलाना साहब का दावा है कि संसार में केवल इस्लाम ही तौहीद (एकेश्वरवाद) का अलमबरदार है, शेष धर्मों में जिहालत (अज्ञान और मूर्खता) और शिर्क के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है। मौलाना साहब का यह दावा सत्य सिद्ध हो सकता है यदि उनके विश्वास में विरोधाभास न पाया जाय। जमाअते-इस्लामी का कहना है कि मुसलमानों की कोई रवायत, आस्था तथा परम्परा उस समय तक प्रमाणित नहीं मानी जा सकती तब तक कि ईश्वरीय ग्रन्थ कुरान शरीफ उसकी गवाही न दे। अभिप्राय यह कि कुरान शरीफ ही एक ऐसा प्रमाणित ग्रन्थ है जिसके दर्पण में ही हमें इस्लामी तौहीद (एकेश्वर-वाद) शिर्क (ईश्वरीय सत्ता में किसी अन्य का सम्मिलित करना यथा-बहुदेववाद अथवा मूर्तिपूजा), फरिश्ते (ईश्वर के निकट रहने वाले जीव जो सृष्टि संचालन के कार्य के विभिन्न पदों पर नियुक्त हैं), जिन्न (धरती के ऐसे जीव जिन्हें ईश्वर ने अग्नि से उत्पन्न किया है) पैगम्बर एवं रसूल

ईश्वरीय संदेशवाहक) तथा स्वर्ग और नरक के वास्तविक दर्शन हो सकते हैं इसी विश्वास के आधार पर जमाअते-इस्लामी मुसलमानों के अन्य धार्मिक ग्रन्थों (हसीद आदि) तथा रीति रिवाजों का मूल्यांकन ईश्वरीयवाणी कुरान के द्वारा ही करती है। जो बातें कुरान शरीफ के आधार पर सत्य सिद्ध नहीं होतीं, मौलाना सैय्यद हामिद अली साहब उसे नहीं स्वीकारते, चाहे यह बातें मुसलमानों में पायी जाती हों अथवा यहूदी और ईसाई धर्मों में हों।

मौलाना साहब की यह युक्ति निश्चय ही मानने योग्य है क्योंकि जब वह यह विश्वास ही कर चुके हैं कि अल्लाह ने स्वयं इस्लाम धर्म को पसन्द किया है तथा केवल कुरान शरीफ ही परमात्मा की प्रमाणित वाणी है तो फिर शंका समाधान के लिये मुझे भी कुरान शरीफ को ही आधार बनाना होगा। एकेश्वरवाद के विषय में मौलाना साहब की स्थिति स्पष्ट है, उन्हें वेदों में सर्वत्र शिर्क ही दिखाई पड़ता है जब कि वेद का मन्त्र परमात्मा के स्वरूप को कुछ दूसरी प्रकार से प्रकट करता है:—

'न तस्य प्रतिमाऽअस्ति' (अर्थात उसकी प्रतिमा नहीं है।

—यजुर्वेद

'अन्धतमः प्रविशन्ति येऽ संभूतिमुपासते' (माया कर्म वाले देवी देवताओं की उपासना करने वाले अज्ञान अन्धकार में प्रविष्ट होते हैं)

—यजुर्वेद

जैसा कि मैंने अपने पिछले लेख में कहा था कि मैं मौलाना साहब के विचारों का उत्तर किसी पूर्वाग्रह के आधार पर देना नहीं चाहता। मैं तो स्वयं मौलाना साहब के विश्वासों के आधार पर ही यह जानने का इच्छुक हूं कि ईश्वरीय वाणी कुरान में जिस प्रकार से एकेश्वरवाद को समझाया गया है वह तर्क और दर्शन का विषय क्यों नहीं बन पाता? कुरान शरीफ में एकेश्वरवाद केवल इसी रूप में पाया जाता है कि उसमें परमात्मा स्वयं यह कहलवाता है कि कहो कि बस अल्लाह एक है। इस्लाम

के अतिरिक्त संसार के जितने प्रमुख धर्म हैं सभी परमात्मा को एक घोषित करते हैं किन्तु इतना घोषित कर देने भर से ही दार्शनिक आधार पर परमात्मा एक नहीं हो जाता। दर्शन और तर्क के आधार पर परमात्मा का 'एकत्व' गणना और समता दोनों के लिये ही एकसा होना चाहिये। अपने पिछले लेख में मैं इस विषय पर काफी कह चुका हूं। पिछले लेख में मैंने फरिश्तों के अनादि अस्तित्व का प्रश्न उठाया था। मुझे विश्वास था कि मेरे बुजुर्ग मौलाना साहब मेरी शंकाओं का समाधान करके मुझे ठीक मार्ग दिखायेंगे किन्तु अभी तक मुझे उनकी ओर से कोई संकेत प्राप्त नहीं हुआ है। अस्तुः शिर्क और तौहीद के संदर्भ में दूसरी शंका प्रस्तुत कर रहा हूं।

मुसलमान होने के लिये यह आवश्यक है कि हर व्यक्ति को तीन बातों पर ईमान लाना आवश्यक है, वह हैं–तौहीद (एकेश्वरवाद), रिसालत (ईश्वरीय सदेशवाहक) तथा आखिरत (प्रलयोपरान्त कर्म फल की स्थिति)।

कुरान और इस्लाम की दृष्टि में परमात्मा यह नहीं चाहता कि मनुष्य केवल ईश्वर की ही आज्ञा माने बरन उसे अल्लाह और उसके पैगम्बर दोनों की ही आज्ञा माननी होगी। यदि कोई व्यक्ति केवल मुवाहिद (एकेश्वरवादी) ही है तो उसे ईमानवाला नहीं कहा जा सकता। मुवाहिद के लिये रसूल अर्थात परमात्मा के संदेशवाहकों पर भी ईमान लाना अनिवार्य है। मुसलमानों का कलमा भी इसी बात को स्पष्ट करता है:—

'ला इलाहि इल्लल्लाह-मुहम्मदुं रसूलल्लाह'

(नहीं है सिवाय परमात्मा के कोई और तथा मुहम्मद उसके रसूल हैं)

कुरान से प्रकट होता है कि परमात्मा अपने संदेशवाहकों द्वारा ही अपना सदेश मनुष्यों के लिये भेजता रहा है। पैगम्बर या सदेशवाहक पृथ्वी के प्राणी रहे हैं। इसलिये ७ वें आकाश पर विराजमान परमात्मा अपने विशेष फरिश्ते जिब्राइल के द्वारा पैगम्बरों पर सन्देश भिजवाता है

ताकि मनुष्य सत्धर्म का मार्ग ग्रहण कर सके। रसूल अल्लाह हजरत मोहम्मद साहब सल्ल० का रुतबा परमेश्वर किस प्रकार प्रकट करता है, यह कुरान में इस प्रकार है —

'जब अल्लाह और उसका पैगम्बर कोई बात ठहरा दे तो किसी मुसलमान औरत और मर्द को अपने काम का अधिकार नहीं है। और जिसने अल्लाह और उसके पैगम्बर का हुक्म नहीं माना वह जाहिरा राह भूल गया।'

(कुरान, सूरे अहजाब)

एक ओर तो कुरान शरीफ में बराबर यह कहा जाता है कि परमात्मा सर्वशक्तिमान, सृष्टिकर्ता, धरती और आकाश का स्वामी तथा सर्वत्र व्याप्त है परन्तु दूसरी ओर यह भी उल्लेख मिलता है कि परमात्मा अर्श (आकाश) से अपना संदेश हजरत मोहम्मद साहब सल्ल० पर भेजता है। यदि परमात्मा सर्वशक्तिमान है तो उसे अपने किसी भी कार्य के लिये किसी वस्तु को आधार एवं माध्यम बनाने की आवश्यकता नहीं है। यदि परमात्मा मनुष्यों में सत्धर्म का प्रकाश करना चाहेगा तो प्रकाश होगा और यदि गुमरही (पथभ्रष्टता) का अन्धकार चाहेगा तो अन्धेरा रहेगा, जैसी कि कहावत है—

'तेरी सत्ता के बिना हे! प्रभु मगल मूल।
पत्ता भी हिलता नहीं, खिलता कहीं न फूल॥'

मनुष्य केवल एक अल्लाह की पूजें अथवा शिर्क करें, यह विचारने और कर्म करने की शक्ति मनुष्यों को किसने दी? कुरान शरीफ में परमात्मा स्वयं कहता है—

'ऐ पैगम्बर (कुरान) जो तुम्हारे परवरिदगार के यहां से पैगाम भेजा गया है उसी पर चले जाओ। खुदा के सिवाय कोई पूजित नहीं और मुशरकीन (शिर्क करने वालों) से अलग रहो। अगर खुदा चाहता तो वे शरीक न ठहराते (परमेश्वर के स्थान पर किसी अन्य की पूजा) और

हमने तुमको इन पर निगहबान नहीं किया और न तुम इन पर वकील हो।
(कुरान, सूरे अनआम)

उपरोक्त आयत में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि यदि परमात्मा चाहता तो अपनी सत्ता में किसी को सम्मिलित करने (शिर्क करने) से मनुष्यों को रोक सकता था। किन्तु उसने मनुष्यों को ऐसा करने से नहीं रोका। इतना ही नहीं परमात्मा ने यहां तक कहा कि ऐ! पैगम्बर (हजरत मोहम्मद साहब सल्ल०) तुम बहुदेववादियों अथवा सम्मिलित करने वालों के न निगहबान हो और न वकील। इस आयत से क्या यह स्पष्ट नहीं होता कि आज संसार में और विशेषकर वेदों में जो शिर्क मौलाना साहब को दृष्टिगोचर हो रहा है वह धरती और आकाश के स्वामी परमात्मा की मर्जी से ही है। यदि परमात्मा चाहता तो मनुष्य के हृदय में शिर्क की भावना ही नहीं उत्पन्न होती, मनुष्य एक पैगम्बर और एक ईश्वर को ही मानकर प्रकृति धर्म इस्लाम के पथ का अनुसरण करता रहता। किन्तु लगता है कदाचित परमात्मा को मनुष्यों का एक ही मत में विश्वास करना रुचिकर नहीं लगता, इसलिये उसने लोगों को शिर्क करने की भी खुली छूट एवं अनुमति दे रखी है।

कुरान की सूरे अनआम की उपरोक्त आयतों के पश्चात यदि अन्यत्र परमात्मा शिर्क को गलत ठहराता है और मुशरकीन (शिर्क करने वालों) के लिये कठोर से कठोर नारकीय यातनायें निर्धारित करता है तो इसमें मुशरिक के स्थान पर परमात्मा स्वयं ही दोषी सिद्ध होता है। पहले मनुष्यों को शिर्क की खुली छूट देना, फिर फरिश्तों और रसूलों के माध्यम से मनुष्यों को इस गुनाहे-अजीम से सचेत करना और न मानने पर उन्हें नारकीय यातनायें देना, कुछ ऐसा है जैसा कि जबर मारे और रोने न दे।

मौलाना सैय्यद हामिद अली साहब तथा जमाअते-इस्लामी को यह बताना चाहिये कि यदि वेदों में मानवीय हस्तक्षेप हुआ है तो पूर्णरूप

से सुरक्षित पवित्र ईश्वरीय वाणी कुरान में उक्त प्रकार का विरोधाभास क्यों पाया जाता है ? 'केवल' लाइलाहि इल्लल्लाह (नहीं है ईश्वर के अतिरिक्त कोई अन्य) कहने वाला व्यक्ति ऐकेश्वरवादी तो हो सकता है किन्तु सत्धर्म का अनुयायी, ईमानवाला उसी समय हो सकेगा जबकि वह परमपिता, सर्वशक्तिमान परमात्मा में विश्वास के साथ हजरत मोहम्मद साहब सल्ल० में भी उसी आस्था का परिचय दे और उन्हें ईश्वरीय संदेशवाहक स्वीकार करे, इस युक्ति का आखिर क्या आधार है ? यदि कुरान, तौहीद (एकेश्वरवाद) का एक मात्र प्रमाणित ग्रन्थ है तो परमात्मा की सत्ता को गणना और समता में एक मानकर उसके नाम के साथ किसी फरिश्ते अथवा पैगम्बर का नाम जोड़ना स्पष्टतः शिर्क हो जाता है। तौहीद (एकेश्वरवाद) का तो यही अर्थ है कि निराकार सर्वशक्तिमान, सर्वगुण सम्पन्न, सर्वव्यापक, अनादि और अनुपम परमात्मा के एकत्व में विश्वास करना। इसके विपरीत यदि हम इस परमात्मा का कोई भी आधार अथवा माध्यम (सृष्टि कार्य संचालन में) स्थापित करते हैं या उसके नाम के साथ किसी प्राणी का नाम सम्मिलित करते हैं तो भले ही मौलाना साहब पूर्वाग्रह के कारण इसे शिर्क न कहें, वस्तुतः वह कहलायेगा शिर्क ही···।

कुरान शरीफ में परमात्मा के स्वरूप की भी विचित्रता है। उदाहरण निम्न प्रकार है—

"अल्लाह आस्मान और जमीन की रोशनी है। उसकी रोशनी की मिसाल ऐसी है कि जैसे एक आला है। उस आले में एक चिराग और चिराग एक शीशे की एक कन्डील में रखा है (और) कन्डील एक सितारे की तरह चमकता है।"

(कुरान, सूरे नूर)

उपरोक्त उपमा और अलंकार के द्वारा परमात्मा ने अपने ज्योति स्वरूप को मनुष्यों पर प्रकट किया है। फलतः हम इस परिणाम पर

पहुंचते हैं कि अल्लाह निराकार ज्योति स्वरूप है। वह लिंग भेद से परे सर्वत्र व्याप्त है। वेदों में भी परमात्मा को अनन्त ज्योति कहा गया है। कुरान शरीफ में परमात्मा को ज्योति स्वरूप देखते हुए भी विभिन्न स्थानों पर उसी ग्रन्थ में दूसरे रूप भी सामने आते हैं जो आश्चर्य में डाल देते हैं। इसमें खुदा वार्ता करता है, क्रोधित होता है, अपने हाथों से कार्य करता है, तख्त पर बैठता है तथा पैगम्बरों को दर्शन देता है। यदि परमात्मा लिंग भेद से परे एक अनन्त ज्योति है तो उसमें उपरोक्त बातों का पाया जाना असम्भव है। अभौतिक परमात्मा में भौतिक गुणों का समावेश पूर्णता शिर्क है, इस प्रश्न पर भी मौलाना साहब को विचार करना होगा। सर्वव्यापक परमात्मा का कोई निश्चित स्थान नहीं होता। वह तो सर्वत्र व्यापक है, सर्वशक्तिमान है। ऐसी परिभाषा के पश्चात भी यदि कुरान शरीफ में परमात्मा अपनी ही दलील के विपरीत दूसरा स्वरूप भी प्रकट करे, तो आश्चर्य होना स्वाभाविक है—

"तुम्हारा परवर्दिगार अल्लाह है जिसने ६ दिन में जमीन और आसमान को पैदा किया फिर तख्त पर जा विराजा·····।"

(कुरान, सूरे आराफ)

"तुम्हारा परवर्दिगार वही अल्लाह है जिसने ६ दिन में आस्मान और जमीन को बनाया फिर अर्श (आकाश) पर जा बिराजा।"

(कुरान, सूरे यूनिस)

दार्शनिक दृष्टिकोण से सर्वशक्तिमान अल्लाह (परमात्मा) पदार्थ, स्थान और काल की सीमाओं में नहीं आता। जमीन और आस्मान के निर्माण में अल्लाह की कार्यक्षमता में 'दिन' अर्थात काल की सीमाओं को सम्मिलित करना एक दम शिर्क नहीं तो और क्या है ?

—०—

क्या कुरान ईश्वरीय ग्रन्थ है ?

भारतीय जमाअते-इस्लामी नामक मुस्लिम संगठन के मुख पत्र 'कान्ति' ने इन दिनों हिन्दी के माध्यम से एकेश्वरवाद (तौहीद) तथा ईश्वरीय राज्य (हकूमते इलाहिया) का व्यापक प्रचार कार्य आरम्भ किया है। जमाअत के संस्थापक मौलाना अबूआला मौदूदी यद्यपि पाकिस्तान में हैं किन्तु भारत में ही इस संस्था की गतिविधियां सर्वाधिक सक्रिय हैं। इधर इस संस्था ने हिन्दी भाषा में इस्लामी विचारधारा का प्रकाशन काफी मात्रा में किया है। इसका उद्देश्य भी स्पष्ट है। मुसलमानों की नई पीढ़ी अब केवल हिन्दी ही पढ़-लिख सकती है। जमाअत ने इस स्थिति को समझकर यह आवश्यक समझा है कि सम्पूर्ण इस्लामी साहित्य को धीरे-धीरे हिन्दी में ले आया जाय। साप्ताहिक 'कान्ति' का प्रकाशन भी इसी उद्देश्य से किया गया है कि नई पीढ़ी के युवक आधुनिक शिक्षा के रंग में न रंग जायें तथा इस्लाम की शिक्षा को हिन्दी के माध्यम से ही समझते रहें।

जमाअते-इस्लामी के पत्र 'कान्ति' ने एक तीर से दो शिकार करने की योजना बनाई है। प्रथम यह कि मुसलमानों की नई पीढ़ी आधुनिक शिक्षा के साथ-साथ दीनी तालीम को समझती रहे और दूसरा यह कि अमुस्लिम हिन्दु समाज के सामने भी इस्लाम की महानता को दर्शाया जाये। जमाअते-इस्लामी ने अपनी महानता के लिये एकेश्वरवाद का डंका पीटना आरम्भ किया है। हिन्दी साप्ताहिक 'कान्ति' बराबर यह दिखाने का प्रयत्न कर रहा है कि संसार में केवल इस्लाम ही एकेश्वरवाद का नाम लेवा है, शेष धर्मों में एकेश्वरवाद के स्थान पर बहुदेववाद एवं मूर्तिपूजा (शिर्क) ही पाई जाती है। अपने इस प्रचार कार्य में जमाअत तथा 'कान्ति' को अल्लाह के फजलो-करम से श्री दुर्गाशंकर सत्यार्थी जैसे

दिग्गज विद्वान मिल गये हैं जो इस्लामी एकेश्वरवाद का अलम उठाने में जमाअत से भी आगे बढ़ गये हैं। 'कान्ति' में प्रकाशित श्री सत्यार्थी के लेखों से लगता है कि वह एक विकृत एवं परिश्रान्त आर्य समाजी हैं जो अपनी ज्ञान गरिमा का उपयोग उस वर्ग के हित में कर रहे हैं जो अन्धकार को ही प्रकाश कहने का दंभ करता है। श्री सत्यार्थी तथा जमाअते-इस्लामी का गठबन्धन निश्चय ही एक रहस्य है। सत्यार्थी जी फरमाते हैं—

"हिन्दुधर्म और इस्लाम जोकि अभी तक दो बिल्कुल विपरीत धर्म समझे जाते थे, 'कान्ति' ने उनके विषय में इस रहस्य पर से नकाब उठा दिया है कि वे एक हैं—उन्हें अलग मानने वाले गलती पर हैं।

(कान्ति १५ जुलाई ६९)

सत्यार्थी जी ने बड़ी उम्दा बात कही है। इस्लाम और हिन्दु धर्म को एक घोषित करके उन्होंने काबा और बुतखाना का अन्तर ही समाप्त कर दिया।

जमाअते-इस्लामी तथा उसके भक्त श्री दुर्गाशंकर सत्यार्थी जिस आधार पर इस्लाम और हिन्दु धर्म को एक मानते हैं, वहां एकता की नहीं, अलगाव की ही तस्वीर दिखाई पड़ती है। जमाअत तथा उसके मुल्लाओं का कहना है कि यदि हिन्दु धर्म एकेश्वरवाद को अपनाले तथा ईश्वरीय राज्य स्थापित करने के कार्य में सक्रिय होने लगे तो इस्लाम और हिन्दु धर्म, दोनों का एक ही स्वरूप हो जायगा। जमाअत के मुल्लाओं की यह स्पष्ट घोषणा है कि केवल कुरान ही पवित्र ईश्वरीय वाणी है जिसमें एकेश्वरवाद को स्वयं परमात्मा ने अपने पैगम्बर के द्वारा मनुष्यों को समझाया है। मुल्लाओं का दावा है कि कुरान के अलावा ससार में कोई भी ऐसा धार्मिक ग्रन्थ नहीं है जिसे प्रमाणित रूप से ईश्वरीय वाणी कहा जा सके। जमाअते-इस्लामी पवित्र ईश्वरीयवाणी कुरान मजीद के आधार पर ससार में ईश्वरीय शासन स्थापित करने के लिये प्रयत्नशील हैं जिसे हकूमते-इलाहिया का नाम दिया गया है। स्पष्ट है कि जमाअते इस्लामी

और श्री दुर्गाशंकर सत्यार्थी जिस ईश्वरीय शासन की स्थापना का शंखनाद करने जा रहे हैं वह वस्तुतः एक खतरनाक चाल है। ईश्वरीय शासन की स्थापना का नारा मूलतः अमुस्लिमों को मुसलमान बनाने का नारा है। ईश्वरीय शासन की स्थापना के लिये अमुस्लिमों को सर्वप्रथम कुरान मजीद को ईश्वरीयवाणी स्वीकार करना होगा। कुरान मजीद के कथित एकेश्वर-वाद के साथ ही रिसालत (ह० मोहम्मद साहब सल्ल०) में पूरा विश्वास करना होगा और उसके पश्चात स्वयं को मुसलमान बनाये जाने के लिये पेश करना होगा। कितने शानदार और आसान तरीके से सत्यार्थी जी ने हिन्दु धर्म और इस्लाम का सदियों पुराना भेद मिटा दिया किन्तु बकौल गालिब के:—

हमको मालूम है जन्नत की हकीकत लेकिन
दिल के बहलाने को गालिब वह ख्याल अच्छा है

जमाअते-इस्लामी के मुख-पत्र 'कान्ति' ने जिस ईश्वरीय राज्य की स्थापना का स्वप्न देखा है, वह एक ऐसा खतरा है जिससे प्रत्येक बुद्धिजीवी विशेषकर, शिक्षित मुस्लिम नवयुवकों को भी सचेत होने की आवश्यकता है। जमाअते-इस्लामी के पास इस बात के क्या प्रमाण हैं कि केवल कुरान शरीफ ही ईश्वरीयवाणी है? जिस प्रकार के एकेश्वरवाद के नाम पर कुरानशरीफ को ईश्वरीयवाणी बताने का दावा किया जाता है वह स्वयं ही विरोधाभास से परिपूर्ण है। पौराणिक मान्यताओं एवं गाथाओं के आधार पर प्रचलित कोई विचारधारा उस समय तक स्वीकार योग्य नहीं हो सकती जब तक वह तर्क और दर्शन की कसौटी पर खरी न उतरे। जिस एकेश्वर-वादी परमात्मा ने मनुष्य को जन्म दिया क्या उसमें इतनी भी शक्ति नहीं थी कि वह मनुष्यों को बहुदेववाद (शिर्क) की ओर न जाने दे? मनुष्य को उत्पन्न करने के पश्चात यदि परमात्मा चाहता है कि सब मनुष्य केवल एक परमात्मा को ही पूजें तो फिर अल्लाह ने संसार में 'कुफ्र' (असत्य) का रास्ता क्यों बनाया? सम्पूर्ण कुरान में जिस प्रकार से एकेश्वर-

वाद को प्रकट किया गया है वह दर्शन का विषय न होकर, छोटे-छोटे उदाहरणों द्वारा राजनीतिक सत्ता प्राप्ति का साधन मात्र है। इस्लाम से पूर्व अरब देश में सर्वत्र मूर्तिपूजा होती थी। वर्तमान काबा एक समय विशाल मूर्ति केन्द्र था। मक्का की आर्थिक शक्ति बड़े-बड़े मूर्ति पूजक कबीलों के सरदारों के हाथों में रहती थी। इसी आर्थिक शक्ति को केन्द्रित करने के उद्देश्य से मूर्ति पूजा के विरुद्ध एकेश्वरवाद का नारा उस काल में इस्लाम ने दिया। मूर्ति पूजकों को मुश्रिक और काफिर कहा गया तथा उनको नरक की यातनाओं से आतंकित किया गया। मक्का की विजय का इतिहास, एकेश्वरवादी दर्शन की विजय का इतिहास नहीं है वरन वह तो राजनीतिक और आर्थिक सत्ता की विजय का इतिहास है। एकेश्वरवाद और बहुदेववाद, यदि बुद्धि और ज्ञान का विषय हैं तो इनमें युद्ध और 'जिहाद' का प्रश्न नहीं उठना चाहिये। इस्लाम के प्रचार में अकेले अरब में ही कई जिहाद हुये, क्या वह एकेश्वरवादी दर्शन से प्रेरित थे ? क्या परमात्मा स्वयं चाहता था कि एकेश्वरवादी और बहुदेववादी परस्पर युद्ध करने लगें ? यदि नहीं तो फिर कुरान में अल्लाह किस उद्देश्य से फरमाता है;—

—"अल्लाह ने मुसलमानों से उनकी जानें और उनके माल खरीद लिये हैं कि उनके बदले उनको वैकुन्ठ देगा ताकि अल्लाह की राह में लड़ें और मारें और मरें यह खुदा की पक्की प्रतिज्ञा है जिसका पूरा करना उसने अपने ऊपर लाजिम कर लिया है (और यह अहद) तौरात, इंजिल और कुरान में है।"

(कुरान, सूरे तोबा)

क्या यही वह एकेश्वरवादी परमात्मा है जो अपनी पूजा के लिये मनुष्यों को मारने मरने की प्रेरणा देता है और इसी परमात्मा के राज्य की स्थापना के लिये जमाअते-इस्लामी तथा श्री सत्यार्थी जी मनुष्यों को दावते-दीन (धर्म का निमन्त्रण) देते फिर रहे हैं ?

जमाअते-इस्लामी के विश्वास के आधार पर कुरान शरीफ के एकेश्वरवाद के आगे अन्य धर्मों का ज्ञान दर्शन सब कुछ हेय है। जमाअते-इस्लामी का कहना है कि परमात्मा ने कुरान शरीफ की एक-एक आयत में एकेश्वरवादी सिद्धांत खोल-खोलकर साफ तौर से समझा दिये हैं परमात्मा फरमाता है;—

"(शुरू) अल्लाह के नाम से जो निहायत दयावान मेहरवान है। अलिफ-लाम-मीम ( ) यह वह पुस्तक है जिसमें (कलामे खुदा होने में) कुछ भी सन्देह नहीं, विश्वास (ईमान) लाने वालों को राह बताती है।"

(कुरान, पहिला पारा सूरे बकर)

पवित्र कुरान शरीफ के पूर्णतः ईश्वरीयवाणी होने के प्रमाण में उपरोक्त आयतें स्वयं परमात्मा ने नाजिल (अवतरित) की हैं, ऐसा जमाअते-इस्लामी के उल्मा तथा समस्त मुसलमान मानते हैं। प्रश्न उठता है कि इन आयतों में यह कहां और कैसे प्रकट होता है कि इन्हें परमात्मा ने ही उतारा है ? और यदि मान भी लिया जाय कि यह परमेश्वर की पवित्र वाणी है तो जमाअते-इस्लामी के नेताओं को मेरा चैलेंज है कि वह उपरोक्त आयत में "अलिफ-लाम-मीम" का अर्थ बतायें। यदि जमाअत के उल्मा इन शब्दों (हूरुफे-मुकत्तआत) का अर्थ बता सकेंगे तो मैं सहर्ष इस्लाम धर्म को स्वीकार करने को तैयार हूं। वस्तुतः अलिफ-लाम-मीम, इनका क्या अर्थ है ? इस प्रश्न का कोई उत्तर नहीं। इसका वास्तविक ज्ञान केवल ईश्वर को ही है, ऐसा कह कर सब मुसलमान सन्तोष कर लेते हैं। कुरान शरीफ के विषय में उस समय भी सन्देह प्रकट किया गया था जब इसकी आयतें ह० मोहम्मद साहब सल्ल०, अरब के लोगों को सुनाते थे। अरब के मूर्तिपूजकों का कहना था कि यह परमेश्वर की वाणी नहीं है। इस सन्देह को दूर करने के लिये केवल यही कहा गया कि ऐसी आयतें

कोई भी मनुष्य बना कर नहीं दिखा सकता। ह० मोहम्मद साहब सल्ल० को कुरान में उम्मी (सांसारिक शिक्षा से रहित) बताया गया है तथा कहा गया है कि उम्मी होने के नाते वह स्वयं इन आयतों को नहीं बना सकते। यही दो युक्तियां सम्पूर्ण कुरान में इसके ईश्वरीयवाणी होने के प्रमाण स्वरूप दी गई हैं। इसके विपरीत कुरान में ऐसा प्रमाण मिलता है कि कुछ लोग आयतें पढ़ते समय अपनी बनाई हुई आयतें भी शामिल कर लिया करते थे: —

"इन्हीं में एक पन्थ ऐसा है जो किताब पढ़ते समय अपनी जबान को मरोड़ते (ऐसा जोड़-तोड़ मिलाते हैं) ताकि तुम समझो कि वह किताब का भाग है हालांकि यह किताब का हिस्सा नहीं और कहते हैं कि अल्लाह के यहां से है हालांकि वह अल्लाह के यहां से नहीं और जानबूझ कर अल्लाह पर झूठ बोलते हैं।"

(कुरान, सूरे आल इमरान)

जमाअते-इस्लामी के उल्माओं को यह बताना होगा कि कुरान शरीफ को किन तर्कों के आधार पर ईश्वरीय ग्रन्थ मानना चाहिए ? यदि इसके इश्वरीय ग्रन्थ होने के प्रमाण में एकेश्वरवाद को पेश किया जाता है तो उसे एकेश्वरवाद न कह कर, विरोधाभास कहना चाहिये। इस्लाम किस प्रकार के एकेश्वरवाद को मानता है, इस प्रश्न पर मैं पिछले दो लेखों में प्रकाश डाल चुका हूं। हकूमते इलाहिया (ईश्वरीय राज्य) की स्थापना से पूर्व जमाअत के उल्माओं को कुरान शरीफ के ईश्वरीय ग्रन्थ होने की पुष्टि करनी चाहिये ताकि शिर्क को छोड़ा जा सके।

— o —

कुरान दर्शन

भारतीय जमाअते-इस्लामी तथा उसके नेता मौलाना सैय्यद हामिद अली साहब का यह दावा है कि पवित्र ईश्वरीय वाणी कुरान शरीफ ही एक ऐसा अलौकिक अनुपम ग्रन्थ है जिसमें कहीं भी, किसी प्रकार का, लौकिक हस्तक्षेप नहीं हो सका है। मौलाना साहब अपने इसी दावे के आधार पर कुरान शरीफ को पूर्णतः सुरक्षित ग्रन्थ घोषित करते हुये अन्य धर्मों के ग्रन्थों को विशुद्ध और सुरक्षित नहीं मानते। जमाअते-इस्लामी इसी अस्वीकारोक्ति के आधार पर, यह कहती है कि आर्यों के 'वेद', यहूदियों की 'जबूर' और तौरात (धार्मिक ग्रन्थ) तथा इसाइयों की 'इंजील' (बाइबिल) प्रमाणित ईश्वरीय वाणी नहीं है। मौलाना साहब का विश्वास है कि अमुस्लिमों के इन धार्मिक ग्रन्थों में मानवीय हस्तक्षेप हुआ है जिस कारण इन्हें अलौकिक ग्रन्थ नहीं कहा जा सकता।

उपरोक्त दावे के सम्बन्ध में मौलाना साहब निम्नलिखित दो दलीलें पेश करते हैं;—

१—ईश्वरीय वाणी कुरान शरीफ की सुरक्षा स्वयं परमात्मा ने की है।

२—अन्य धर्मों के ग्रन्थों में शिर्क (अनेकेश्वरवाद, बहुदेववाद तथा मूर्तिपूजा) पाया जाता है, जिस कारण इन्हें ईश्वरीय ग्रन्थों के रूप में मान्यता नहीं दी जा सकती।

मौलाना साहब की उपरोक्त दोनों दलीलों पर विचार करने से पूर्व, यह आवश्यक है कि इस सम्बन्ध में पवित्र ईश्वरीय वाणी कुरान शरीफ की साक्षी भी प्राप्त की जाय। महान कुरान शरीफ के प्रत्येक अक्षर

और 'आयत' (ईश्वरीय वाणी) की सुरक्षा स्वयं परमात्मा ने की है, इस युक्ति के सम्बन्ध में कुरान शरीफ की साक्षी इस प्रकार है;—

"बल्कि यह कुरान बड़ी शान का है ( ) लौहे महफूज में लिखा हुआ है (२२) (कुरान, सूरे बुरुज)

अभिप्राय यह कि सम्पूर्ण कुरान शरीफ लौहे महफूज पर लिखा हुआ है जिस कारण इसमें किसी प्रकार का मानवीय हस्तक्षेप सम्भव नहीं है। लौहे महफूज एक तख्ती (पट्टी) का नाम है जिस पर परमात्मा प्रत्येक प्राणी के कार्यों तथा सृष्टि के घटनाचक्र को लिख लेता है।

"आस्मान और जमीन में ऐसी कोई छिपी हुई बात नहीं (जो) खुली किताब (लौहे महफूज) में न लिखी हो।

(कुरान, सूरे नम्ल)

परमात्मा ने कुरान शरीफ को लौहे महफूज पर क्यों सुरक्षित रखा है, इसकी भी एक पृष्ठभूमि है। प्रकृति धर्म इस्लाम के अन्तिम संदेशवाहक, हजरत मोहम्मद सल्लल्लाहि अलैहि वसल्लम से पूर्व हुये, विभिन्न ईश्वरीय सदेश वाहकों पर भी परमात्मा ने 'जबूर', 'तौरात' तथा 'इंजील' आदि ग्रन्थों के रूप में अपनी वाणी अवतरित की थी। इन ग्रन्थों में परमात्मा ने एकेश्वरवाद (तौहीद) की ही शिक्षा दी थी किन्तु पश्चात में, मुसलमानों के मतानुसार, मनुष्यों ने इन ईश्वरीय ग्रन्थों में हेर-फेर करके, इनमें एकेश्वरवाद के स्थान पर 'शिर्क' उत्पन्न कर दिया था। फलतः, परमात्मा ने इस बार, कुरान शरीफ को लौहे महफूज पर लिख लिया था ताकि मनुष्यों के हस्तक्षेप के बावजूद, यह सुरक्षित रहे। ईश्वर ने अपनी वाणी द्वारा लोगों को पहिले ही सावधान कर दिया था कि कुरान शरीफ पूर्णतः सुरक्षित है तथा इसमें मानवीय हस्तक्षेप को कोई अवसर न मिल पायेगा।

यहूदियों के तौरात और इसाइयों की इन्जील (बाइबिल) को, परमात्मा ने लौहे महफूज पर नहीं लिखा था। इसका परिणाम यह हुआ

कि एकेश्वरबाद के उन्नायक हजरत मूसा अलैहिस्सलाम जब 'तूर' नामक पर्वत पर, परमात्मा की वाणी 'तौरात' लेने के लिये गये तो उनके अनुयाइयों ने पीछे से, परमात्मा के स्थान पर एक बछड़े की पूजा आरम्भ कर दी थी। इसी प्रकार हजरत ईसा अलैहिस्सलाम के अनुयायी अपने संदेश वाहक को ईश्वर का पुत्र कहने लगे तथा उनकी मूर्ति की पूजा करने लगे। इस खतरे से बचने के लिये परमात्मा ने इस बार कुरान शरीफ को लौहे महफूज पर लिख लिया, ऐसी व्याख्या सभी मुस्लिम विद्वान करते हैं। इसके आगे बढ़ कर जमाअते इस्लामी यह कहती है कि कुरान शरीफ आदि से ही लौहे महफूज पर लिखा था। आदि मानव तथा प्रथम ईश्वरीय संदेश वाहक, हजरत आदम अलैहिस्सलाम से लेकर हजरत ईसा अलैहिस्सलाम तक जितने सन्देशवाहक (एक लाख चौबीस हजार के लगभग) धरती पर आये, उन सब ने कुरान शरीफ की ही शिक्षा मनुष्यों को दी थी किन्तु शैतान के प्रभाव में आ जाने से मनुष्यों ने ईश्वर की वाणी (मूलतः कुरान शरीफ) में हेर-फेर करके, शिर्क उत्पन्न कर लिया था। फलतः, परमात्मा ने मानवीय हस्तक्षेप के प्रकरणों एवं अशों (शिर्क-मूर्तिपूजा सम्बन्धी बातों) को निकाल कर, अपनी विशुद्धवाणी अन्तिम सदेशवाहक हजरत मोहम्मद साहब सल्ल० के माध्यम से, अन्तिम बार, वर्तमान कुरान शरीफ के रूप में उतारी। कुरान में शिर्क का न पाया जाना ही इस बात का प्रमाण है कि इसकी आयतों को परमात्मा ने लौहे महफूज पर पहिले ही लिख रखा था। फलतः यह सुरक्षित रहा।

मौलाना साहब यहूदी और इसाइयों के ग्रन्थों को प्रमाणित ईश्वरीय वाणी नहीं मानते। मौलाना साहब की दृष्टि में ईसाई और यहूदी 'अहले किताब' (ईश्वरीय ग्रन्थ वाले) तो हैं किन्तु पश्चात में मुश्रिक (शिर्क करने वाले) हो जाने के कारण यह दोनों धर्मानुयायी अपराधी और दन्ड पाने वालों की श्रेणी में आ गये हैं। वेदों में शिर्क होने के कारण हिन्दू धर्मानुयायी भी अपराधी और दण्ड पाने वालों में

आते हैं। ईश्वरीय वाणी में हस्तक्षेप करने (शिर्क करने) के कारण परमात्मा मुसलमानों को इन लोगों से दूर ही रहने के लिये सचेत करता रहता है :—

"मुसलमानों ! यहूदी और ईसाई को मित्र न बनाओ यह एक दूसरे के मित्र हैं और तुम में से कोई इनको दोस्त बनायेगा तो बेशक वह इन्हीं में का है क्योंकि खुदा जालिम लोगों को सीधा रास्ता नहीं दिखलाया करता।"

(कुरान, सूरे मायदा)

"—मुसलमानों को चाहिये कि मुसलमानों को छोड़कर काफिरों (जो इस्लाम धर्म में विश्वास न करते हों) को अपना दोस्त न बनावें और जो वैसा करेगा, तो उससे और अल्लाह से कुछ सरोकार नहीं।"

(कुरान, सूरे आल इमरान)

उपरोक्त दलीलों और कुरान शरीफ की साक्षियों से स्पष्ट है कि वर्तमान प्राप्य कुरान शरीफ में किसी प्रकार का लौकिक समावेश नहीं हुआ है तथा यह पूर्णतः सुरक्षित एवं एकमात्र सप्रमाणित ईश्वरीय ग्रन्थ है। बात यदि यहीं पर समाप्त हो जाती तो शंका को पनपने का अवसर नहीं मिलता। मौलाना साहब की उपरोक्त दलीलों और कुरान शरीफ की साक्षियों के बावजूद, कुरान के ईश्वरीय ग्रन्थ होने में, एक शंका जन्म लेती है। जहां तक तौहीद (एकेश्वरवाद) और शिर्क (बहुदेववाद और मूर्तिपूजा) का प्रश्न है, वहां मैंने पिछले लेख में, कुरान शरीफ में शिर्क होने की शंकायें सप्रमाण पेश की हैं। माननीय हस्तक्षेप के सम्बन्ध में जो दलील मौलाना साहब की है, उसी पर विचार करना इस लेख का उद्देश्य है।

वर्तमान कुरान शरीफ में दो प्रकार की आयतें (ईश्वरीयवाणी) हैं, एक मक्की और दूसरी मदनी। मक्का और मदीना, यह दो स्थान धार्मिक दृष्टि से बड़े पवित्र तीर्थ हैं। हजरत मोहम्मद साहब सल्ल० पर

सर्वप्रथम मक्का में जो आयतें उतरीं उन्हें मक्की कहा जाता है और पश्चात में जो मदीना में उतरीं, उन्हें मदनी कहा गया है। सर्वशक्तिमान परमात्मा ने समय और स्थिति के अनुरूप, क्रमानुसार अपनी वाणी को धीरे-धीरे मनुष्यों पर कुरान के रूप में उतारा था। आरम्भ में रसूल अल्लाह (ह० मौहम्मद साहब सल्ल०) पर मक्की आयतें उतारी गईं तथा पश्चात में उनके मदीना चले जाने पर, मदनी आयतें अवतरित हुईं। परमात्मा ने यह क्रम स्वयं निर्धारित किया था जिसमें किसी प्रकार के मानवीय हस्तक्षेप की कोई सम्भावना नहीं होनी चाहिये। आश्चर्य है कि वर्तमान कुरान शरीफ तस्वीर का कुछ दूसरा ही रुख प्रकट कर रहा है। उदाहरण के लिये कुरान शरीफ में 'सूरे अलक' ऐसी सूरत है जिसकी प्रथम पांच आयतें, अन्तिम सन्देशवाहक हजरत मोहम्मद साहब सल्ल० पर सबसे पहिले अवतरित हुई थीं। वह पवित्र आयतें निम्न प्रकार हैं:—

"—अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मेहरवान है। अपने परवर्दिगार का नाम लेकर जिसने पैदा किया कुरआन पढ़े चलो ( ) आदमी को जमे हुये लोहू से बनाया (२) पढ़े चलो तेरा परवर्दिगार बड़ा करीम है। (३) जिसने कलम के द्वारा विद्या सिखाई। (४) मनुष्य को वह बातें सिखाईं जो उसे मालूम न थीं। (५)

इस बात पर मौलाना साहब सहमत हैं कि कुरान शरीफ की समस्त आयतों को संकलित करके पूर्णतः उत्तरदायी विद्वानों ने इसे व्यवस्थित किया है तथा इसे पुस्तक का रूप दिया है। किन्तु शंका उस समय उत्पन्न होती है जब हम यह देखते हैं कि संकलित और व्यवस्थित वर्तमान कुरान शरीफ में, मानवीय हस्तक्षेप यहां तक बढ़ गया कि सर्व प्रथम अवतरित होने वाली उपरोक्त पांच आयतों को पीछे कर दिया तथा 'सूरे बकर' जैसी पश्चात की मदनी आयतों को सबसे पहिले कर दिया गया। परमात्मा ने जिस क्रम से, समय और स्थिति को समझते हुये, नियमानुसार पवित्र आयतों को अपने सन्देशवाहक पर उतार कर, मनुष्यों

को एकेश्वरवाद के लिये प्रेरित किया था, ठीक उसी क्रम एवं स्थिति के आधार पर, संकलनकर्त्ताओं को इसे व्यवस्थित करना चाहिये था। आश्चर्य है कि लौहे महफूज पर सुरक्षित एवं व्यवस्थित होने के बावजूद अपनी आदत से मजबूर इन्सान ने इसमें भी हेर-फेर कर दी। जमाअते-इस्लामी तथा मौलाना सैय्यद हामिद अली साहब क्या इस प्रश्न का उत्तर दे सकेंगे कि आयतों के अवतरण के ईश्वरीय क्रम के विरुद्ध, वर्तमान कुरान शरीफ के संकलनकर्ताओं ने, आयतों को आगे-पीछे करके, मानवीय हस्तक्षेप किया है या नहीं ?

कुरान शरीफ में माननीय हस्तक्षेप का दूसरा प्रबल उदाहरण भी मौलाना साहब की दलीलों को चुनौती देता दिखाई देता है। पवित्र ईश्वरीयवाणी कुरान शरीफ में, हर सूरत (अध्याय) से पूर्व निम्न आयत अवश्य आई है :—

बिस्मिल्लाहिरहमानिरहीम (आरम्भ परमेश्वर के नाम से जो कृपालु और दयालु है)।

आश्चर्य है कि कुरान शरीफ की 'सूरे तौबा' में उपरोक्त आयत दिखाई नहीं देती। अधिकतर मुसलमानों के पास इनका कोई उत्तर नहीं है कि बिस्मिल्ला जैसी प्रमुख और महत्वपूर्ण आयत, सूरे-तौबा से क्यों गायब है ? अलबत्ता, मौलाना साहब शायद यह अवश्य कहने की हिम्मत बटोरेंगे कि किसी नाराजगी के कारण परमात्मा ने यह आयत केवल इसी सूरत में नहीं भेजी है। इस नाराजगी की कोई वजह हो सकती है किन्तु कुरान शरीफ की सूरे-तौबा, कहीं भी यह स्पष्ट नहीं करती कि बिस्मिल्ला की आयत को परमात्मा ने स्वयं रोक रखा था। मौलाना साहब केवल कुरान शरीफ के दर्पण में ही हर आस्था और विश्वास की सच्चाई के दर्शन करना चाहते हैं। अस्तु मेरा निवेदन है कि वह मुझे भी उस पवित्र दर्पण में इस सच्चाई के दर्शन करायें कि बिस्मिल्ला की आयत लौहेमहफूज

पर सुरक्षित है या नहीं ? यहां यह शंका स्वाभाविक है कि संकलनकर्ताओं ने किसी निहित उद्देश्य से, इस महत्वपूर्ण सूरत (सूरे-तौबा) का आरम्भ का भाग अनावश्यक समझकर निकाल दिया हो जिस कारण बिस्मिल्ला की आयत भी अग्रभाग के साथ चली गई और इसी अपूर्ण सूरत को वर्तमान कुरान शरीफ में सम्मिलित कर लिया गया हो ।

जमाअते-इस्लामी का एक दूसरा विश्वास भी चमत्कारिक है । मौलाना साहब का कहना है कि कुरान शरीफ की समस्त आयतें परमात्मा द्वारा निर्धारित एवं सुनिश्चित, आदि नियम हैं जिन्हें सर्वकाल तक सुरक्षित रखने के उद्देश्य से सृष्टिकर्ता ने अमरता प्रदान की है । कुरान शरीफ भी मौलाना साहब के उक्त कथन की साक्षी देता है । तर्क और सिद्धान्त के आधार पर यदि परमात्मा अनादि और अनन्त है तो उसके बनाये नियम और शिक्षायें भी अनादि, अनन्त और सर्वकालीन अमरत्वपूर्ण होनी चाहिये । पवित्र ईश्वरीय वाणी कुरान शरीफ में परमात्मा अपने सर्व-कालीन और सार्वभौमिक, आदि नियमों और सन्देशों को जिस प्रकार स्वयं ही बनाता और बिगाड़ता है, उससे ऐसा आभास होता है कि सम्पूर्ण कुरान शरीफ में जो विरोधाभास पाया जाता है उसका एकमात्र कारण मानवीय हस्तक्षेप ही है । उदाहरण स्वरूप निम्न आयत पेश है :—

(ऐ पैगम्बर) हम कोई आयत मन्सूख कर दें या बुद्धि से उसको उतार दें तो उससे अच्छी या वैसी पहुंचा देते हैं । क्या तुमको मालूम नहीं कि अल्लाह हर चीज पर शक्तिशाली है ।"

(कुरान, सूरे बकर)

क्या मौलाना साहब बतायेंगे कि भूत, भविष्य और वर्तमान का ज्ञाता परमात्मा क्यों और किस लिये, अपने ही सन्देश को मन्सूख (रद्द) करता है और किन परिस्थितियों से प्रभावित होकर, मनुष्यों के दिमागों से, अपने पवित्र उद्देश्यों (एकेश्वरवाद को भी) को निकाल देता है ?

अपने ही नियमों और सन्देशों में हेर-फेर करने वाला परमात्मा और उसकी भेजी हुई पवित्र पुस्तक कुरान शरीफ, क्या वास्तव में ईश्वरीय ग्रन्थ कही जाने योग्य है ? इस प्रश्न और शंका पर मौलाना साहब को स्वयं विचार करना चाहिये। जमाअते-इस्लामी भारत वर्ष में परमात्मा द्वारा प्रेरित सत्धर्म (इस्लाम) की स्थापना के लिये अमुस्लिम जनता को धार्मिक निमन्त्रण देती है। जमाअत का विश्वास है कि भारत के निवासी अमुस्लिम (हिन्दू, ईसाई, यहूदी तथा पारसी आदि) निश्चय ही एक दिन अल्लाह की शरण में आयेंगे और ईश्वरीय वाणी पवित्र कुरान शरीफ में अनन्त आस्था एवं अटूट विश्वास प्रकट करेंगे। ईश्वर जमाअत की इस कामना को पूरा करे—इस सद्भावना के साथ, मैं चाहूंगा कि मौलाना साहब अमुस्लिमों की शंकाओं का समाधान भी करते रहें।

—०—

ह० मोहम्मद साहब सल्ल०

जमाअते-इस्लामी का विश्वास है कि इस्लाम धर्म के मूल प्रवर्तक हजरत मोहम्मद साहब सल्लल्लाहि अलैहि वसल्लम, ईश्वर के अन्तिम सन्देशवाहक थे जिन्होंने सम्पूर्ण मनुष्य जाति को एकेश्वरवाद का ईश्वरीय सन्देश दिया। परमात्मा ने उन पर अपना सन्देश, पवित्र कुरान शरीफ के रूप में उतारा तथा इन्हें मार्गदृष्टा बनाकर भेजा। जमाअते-इस्लामी के अनुसार परमात्मा ने हजरत मोहम्मद साहब सल्ल० के पश्चात ईश्वरीय सन्देशवाहकों का भेजना बन्द कर दिया जिस कारण आप को ईश्वर का अन्तिम सन्देशवाहक कहा जाता है। सन्देशवाहकों के भेजने-अर्थात ईश्वरीय वाणी के अवतरण के क्रम को, परमात्मा ने क्यों समाप्त कर दिया, इस पर जमाअते इस्लामी का कहना है कि परमात्मा ने अपने सन्देशवाहक हजरत मोहम्मद साहब सल्ल० के द्वारा अपने सम्पूर्ण सन्देश सुरक्षित रूप से मनुष्यों तक पहुंचा कर, दीन (धर्म) के रूप में इस्लाम को स्थापित कर दिया था। जो लोग परमेश्वर के बताये मार्ग पर (इस्लाम के रास्ते पर) चलेंगे, वह निश्चित रूप से बैकुन्ठ वास करेंगे और जो इस मार्ग से हटकर कुफ्र अथवा शिर्क का मार्ग अपनायेंगे (असत्य अथवा बहुदेववाद एवं मूर्ति-पूजा का रास्ता) वह नरक की यातनायें सहते रहेंगे, ऐसा विश्वास जमाअते इस्लामी प्रकट करती है।

जमाअत की दृष्ट में अन्य समस्त ईश्वरीय सन्देशवाहकों की तुलना में हजरत मोहम्मद साहब सल्ल० का महत्व एव स्थान सबसे ऊंचा है। संसार के समस्त मुसलमान आप को 'हबीबुल्ला' के रूप में पुकारते हैं जिसका अर्थ है—परमात्मा के परमप्रिय। कुरान के अनुसार इस्लाम धर्म के मूल प्रवर्तक हजरत मोहम्मद साहब सल्ल० यद्यपि सांसारिक शिक्षा

से रहित (उम्मी) थे किन्तु अपनी ईश्वरीय प्रदत्त आध्यात्मिक शक्ति, पवित्रता, सच्चरित्रता, न्यायप्रियता तथा मानवीयता के आधार पर आपको परमात्मा के परमप्रिय होने का गौरव प्राप्त हुआ था। ईसा से ५६० वर्ष पश्चात, हर्षवर्धन के काल में, अरब स्थित मक्का नामक स्थान के एक प्रसिद्ध हाशिम परिवार में आपका जन्म हुआ था। आपके पिता का नाम अब्दुल्ला और माता का नाम आम्ना था जो आप को बचपन में ही अनाथ बनाकर स्वर्ग सिधार गये। जमाअते-इस्लामी के अनुसार ४० वर्ष की आयु में उन्हें परमात्मा के विशेष फरिश्ते हजरत जिब्राइल अलैहिस्सलाम के दर्शन हुए और उसी समय से आप पर निरन्तर क्रमानुसार ईश्वरीय सन्देश 'आयतों' के रूप में अवतरित होते रहे। हजरत जिब्राइल अलेहि० आपके पास जो ईश्वरीय सन्देश लाते थे उसे आप उम्मी होने के कारण रट लेते थे तथा पश्चात में अरब के लोगों को (काफिरों, मूर्तिपूजकों, बहुदेववादियों तथा अग्निपूजकों को) सुनाकर उन्हे एकेश्वरवाद के लिये प्रेरित करते थे। आरम्भ में मक्का के अमुस्लिम लोग आप की बातों पर अविश्वास करते थे तथा आपको ईश्वरीय सन्देशवाहक के रूप में स्वीकार नहीं करते थे। फलस्वरूप हजरत मोहम्मद साहब सल्ल० मक्का को छोड़ कर मदीना चले गये और वहां रह कर लोगों को ईश्वरीय सन्देश सुनाते रहे। आपने १३ वर्ष तक मक्का में और १० वर्ष मदीना में एकेश्वरवाद का प्रचार किया। ६३ वर्ष की आयु में परमात्मा के परमप्रिय हजरत मोहम्मद साहब सल्ल० स्वर्ग सिधार गये। आपने अपने जीवन काल में ही इस्लाम की विजय पताका को मक्का और मदीना में फहरा दिया था।

जमाअते-इस्लामी के अनुसार हजरत मोहम्मद साहब सल्ल० का सम्पूर्ण जीवन—आचार और व्यवहार, परमात्मा के नियमों पर आधारित था। यद्यपि पवित्रवाणी कुरान शरीफ में आपके जीवन की पूरी झलक नहीं मिलती फिर भी हदीस आदि ग्रन्थों में आपका सम्पूर्ण जीवन-वृत्तान्त मिल जाता है। हदीस आदि वह ग्रन्थ हैं जिन्हें तत्कालीन महत्वपूर्ण महान व्यक्तियों की लोकोक्ति के आधार पर संकलित किया गया है।

वर्तमान काल में 'सीरत उल नबी' नामक ग्रन्थ, आपके जीवन वृत्तान्त का प्रमाणित ग्रन्थ कहा जाता है। पवित्र ईश्वरीयवाणी कुरान शरीफ में भी 'सूरे मोहम्मद' नाम से एक अध्याय है जिसमें परमात्मा अपने परमप्रिय सन्देशवाहक हजरत मोहम्मद साहब सल्ल० के विषय में फरमाता है:—

"जिन लोगों ने साफ राह जाहिर हुये पीछे इन्कार किया और अल्लाह की राह से रोका और पैगम्बर की दुश्मनी की। यह लोग अल्लाह का कुछ न बिगाड़ेंगे बल्कि वह उनके किये को अकारथ कर देगा।"

जमाअते-इस्लामी का विश्वास है कि, हजरत मोहम्मद साहब सल्ल० को अनेक मोज्जात (ईश्वर प्रदत्त चमत्कार) प्राप्त थे। आप से पूर्व हुये ईश्वरीय सन्देशवाहकों को भी यद्यपि परमात्मा ने मोज्जात प्रदान किये थे किन्तु अपने अन्तिम सदेशवाहक को कुछ अधिक संख्या में यह शक्ति प्रदान की गई थी। इनका संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार है:—

१—आपने अपने इंगित से चन्द्रमा के दो टुकड़े कर दिये थे।

२—आपके शरीर का प्रतिबिम्ब नहीं पड़ता था।

३—आप देखने में भौतिक थे किन्तु वस्तुतः नूरी (प्रकाशवान) थे।

४—आपके लुआबे-दहन (मुख की पवित्र लार) में शक्ति थी जिसके रोगियों के शरीर पर लगाने से उनमें नवजीवन का संचार हो उठता था।

५—आपकी पीठ पर मोहरे-नबूवत (संदेशवाहक होने का चिन्ह) अंकित थी जिसका मुसलमान लोग श्रद्धा और आदर से चुम्बन लिया करते थे।

६—आपका सम्पूर्ण शरीर प्रकाशवान था। जहां आप पधारते, वहां प्रकाश ही प्रकाश बिखरने लगता था।

७—आपके स्वेद बिन्दुओं (पवित्र पसीने से) से सुगन्ध आती थी।

उपरोक्त ईश्वर प्रदत्त असाधारण चमत्कारों के साथ-साथ हजरत मोहम्मद साहब सल्ल० का सबसे बड़ा रुतबा यह था कि आप परमात्मा के निमन्त्रण पर सृष्टि नियन्ता अल्लाह से भेंट करने के लिये, सातवें आकाश पर तशरीफ ले गये थे। अल्लाह से भेंट की गई इस घटना को मेराजे-मुबारक कहा जाता है। मेराजे-मुबारक की झलक हमें पवित्र ईश्वरीय वाणी कुरान शरीफ में इस प्रकार मिलती है :—

"और वह आसमान के ऊंचे किनारे पर था। फिर वह नजदीक हुआ और करीब आ गया। फिर दो कमान के बराबर या उससे भी कम फर्क रह गया।...हालांकि उसने उसको दूसरी बार देखा। अन्तिम हद्द की बेरी के पास। उस (बेरी) के पास बैकुण्ठ रहने की जगह।...निगाह न बहकी न हद्द से बढ़ी। बेशक उसने अपने परवर्दिगार की निशानियों में से बड़ी निशानी देखी।

(कुरान, सूरे नज्म)

इस घटना को पवित्र हदीसों में सविस्तार समझाया गया है। पवित्र कुरान शरीफ में केवल उपरोक्त संकेत ही दिये गये है किन्तु इनके आधार पर कहा जाता है कि परमात्मा ने हजरत जिब्राइल अलैहि० के द्वारा आपको अपने पास बुलाने का निमन्त्रण भेजा। फलतः आप 'बुर्राक' नामक श्वेत घोड़े पर सवार होकर, हजरत जिब्राइल के साथ, विश्व नियन्ता सर्वव्यापक परमात्मा से भेंट करने के लिये सातवें आकाश (अर्शे मुअल्ला) पर पधारे तथा ज्योति स्वरूप प्रभु के दर्शन किये। धरती से आकाश तक जाने-आने में जो समय लगा उसके विषय में कहा जाता है कि आपके बिछौने की उष्णता वापिस आने पर वैसी ही मिली जैसी कि आप छोड़ गये थे तथा द्वार की सांकल भी उसी प्रकार हिलती हुई मिली जैसी कि जाते समय थी। अभिप्राय यह कि यह सारा कार्य इतने कम क्षणों में सम्पन्न हुआ जिसे समय की सीमा में नहीं रखा जा सकता। यद्यपि इस घटना के विश्लेषण में जमाअते-इस्लामी, देव-बन्दी तथा

बरेलवी मुसलमानों में कहीं-कहीं मत भेद है तथापि सुन्नत जमाअत के अधिकांश इस्लाम धर्मानुयायी तथा शिया सम्प्रदाय के लोग इसे उपरोक्त रूप में ही स्वीकार करते हैं। समस्त मुसलमान इस बात से सहमत हैं कि आप परमात्मा के अन्तिम सन्देशवाहक थे तथा आपके पश्चात प्रलयोपरान्त तक कोई सन्देशवाहक नहीं भेजा जायगा। समस्त मुसलमानों की यह भी मान्यता है कि अन्तिम संदेशवाहक से पूर्व जितने भी अन्य संदेशवाहक धरती पर जन्में, वह सब परमात्मा के भेजे हुये नबी थे तथा प्रकृति धर्म इस्लाम की ही शिक्षा देते थे। इसी आधार पर मुसलमानों का यह भी विश्वास है कि कुरान से पूर्व अवतरित अन्य धर्म ग्रन्थ, जैसे-जबूर, तौरात और इजील (यहूदी और ईसाइयों से सम्बन्धित) आदि पुस्तकें भी हजरत मोहम्मद साहब सल्ल० के आगमन की भविष्यवाणी करती हैं, इसीलिये पवित्र वाणी कुरान शरीफ में उपरोक्त धर्मानुयाइयों को प्रकृति धर्म इस्लाम की शरण में आने के लिये प्रेरित किया गया है। यह बात अलग है कि यहूदी और ईसाई अन्तिम संदेशवाहक में विश्वास नहीं रखते और न ही इस्लाम को प्रकृति धर्म मानते हैं। पवित्र कुरान शरीफ के अवतरण काल में भी यहूदी और ईसाई हजरत मोहम्मद साहब सल्ल० में ईमान नहीं लाते थे जब कि अन्तिम संदेशवाहक सदैव ही उपरोक्त धर्मों की पैरवी करते थे तथा इन धर्मानुयाइयों को शिर्क से निकाल कर उन्हें एकेश्वरवाद तथा इस्लाम पर आस्था रखने की शिक्षा देते थे। कुरान में इसे यूं बयान किया गया है:—

"—ऐ पैगम्बर ! न तो यहूदी ही तुमसे कभी रजामन्द होंगे और न ईसाई ही जब तक कि तुम उन्हीं के मजहब की पैरवी न करो। ऐ पैगम्बर ! इन लोगों से कहो कि अल्लाह की हिदायत (इस्लाम) ही हिदायत है।"

(कुरान, सूरे बकर)

यहां यह विचारणीय है कि परमात्मा ने जिन लगभग एक लाख चौबीस हजार संदेशवाहकों को धरती पर मानव-कल्याण के लिए भेजा,

उनकी पूरी सूची न तो पवित्र ईश्वरीय वाणी कुरान शरीफ में मिलती है और न ही तौरात और इंजील में। पवित्र कुरान शरीफ में जिन संदेश वाहकों का जिक्र आया है उनका वर्णन यहूदियों और ईसाइयों के धर्मग्रन्थों में भी मिलता है किन्तु आश्चर्य तो यह देखकर होता है कि जितने रसूलों, पैगम्बरों और संदेशवाहकों की सूची यहूदी, ईसाई और मुसलमानों के ग्रन्थों में मिलती है, लगता है वह सब के सब अरब और उसके आस पास के क्षेत्र मध्यपूर्व में ही हुये। अन्तिम संदेशवाहक हजरत मोहम्मद साहब सल्ल० का जन्म भी मक्का में हुआ जबकि जमाअते-इस्लामी के अनुसार आप सम्पूर्ण मानवजाति के कल्याण के लिये भेजे गये थे। भारत, यूनान और चीन जैसे पुरातन सस्कृतियों के देशों में भी क्या परमात्मा ने प्रकृति धर्म इस्लाम का प्रचार करने के लिये रसूलों को भेजा था, ऐसा वर्णन पवित्र कुरान शरीफ आदि ग्रन्थों में नहीं मिलता। अलबत्ता जमाअते-इस्लामी का विचार है कि भारत में भी अवश्य ही कोई न कोई संदेशवाहक इस्लाम और एकेश्वरवाद का संदेश देने अवश्य आये होंगे। इसी सम्बन्ध में हिन्दी साप्ताहिक 'कान्ति' में प्रकाशित एक लेख में मर्यादा पुरुषोत्तम राम को रसूल माना गया है। मौलाना अबू मोहम्मद इमामुद्दीन रामनगरी की पुस्तक 'अवतार और अकीदए रिसालत' में कहा गया है कि—"हिन्दुस्तान में खुदा के रसूल हुए। राम सम्भव है खुदा के रसूल हों।" जमाअत के नये खुदाई खिदमतगार रामनगरी साहब किबला अपनी पुस्तक में फरमाते हैं:—

—"इन इख्तलाफात से कतए-नजर करके हम हिन्दु मजहब के बुनियादी अकायद पर गौर करते हैं तो इस नतीजे पर पहुंचते हैं कि हिन्दु मजहब के बुनियादी अकायद भी वही हैं जो इस्लाम के बुनियादी अकायद हैं।"

रामनगरी साहब को हिन्दुधर्म के मूल सिद्धान्तों में इस्लामी सिद्धान्तों की छाप दिखाई देती है। सम्भवतः इसी आधार पर मर्यादा-पुरुषोत्तम राम को खुदा के भेजे हुए रसूल मानने की राय कायम करके,

मौलाना साहब यह घोषणा करते हैं कि श्री रामचन्द्रजी भारत में इस्लाम धर्म की शिक्षा देने के लिये भेजे गये थे तथा वह अन्य पैगम्बरों की ही भांति एकेश्वरवादी मुसलमान थे। हिन्दु धर्म और इस्लाम के मूल सिद्धान्तों में किन-किन बातों में समानता पाई जाती है, इस विषय पर मौलाना साहब को खुलकर कहना चाहिये था। दूसरों की अच्छीं बातों में बलात घुस कर, स्वयं को अच्छा सिद्ध करने की कोशिशों से मौलाना साहब अपने आप मियां मिट्ठू भले ही बन लें किन्तु इससे शिक्षित और समझदार वर्ग को भ्रम में नहीं डाला जा सकता।

परमात्मा के अन्तिम संदेशवाहक हजरत मोहम्मद साहब सल्ल० के रसूल होने के सम्बन्ध में जितने प्रमाण और निशानियां पवित्र कुरान शरीफ और हदीसों के आधार पर जमाअते-इस्लामी पेश करती है, वह सब अपने स्थान पर ठीक हो सकती हैं। अलबत्ता एक स्थान पर तनिक सी शंका उत्पन्न होती है जिस पर मौलाना अबू मोहम्मद इमामुद्दीन रामनगरी साहब किबला को रोशनी डालने की कृपा करनी होगी। मुसलमानों का दावा है कि अन्तिम संदेशवाहक हजरत मोहम्मद साहब सल्ल० सम्पूर्ण धरती पर रहने वाली मानव जाति के लिये रसूल बनाकर भेजे गये थे जब कि ईश्वरीय वाणी पवित्र कुरान शरीफ में उल्लेख है कि परमात्मा ने उन्हें केवल मक्का और उसके आस-पास के क्षेत्र में रहने वालों के लिए ही भेजा था :—

—"....और ऐ पैगम्बर हमने इस वजह से उतारा है कि तुम मक्का वालों को और जो लोग उसके आस-पास रहते हैं उनको डराओ ..।"

(कुरान, सूरे अनआम)

—"....और इसी तरह अरबी कुरान हमने उतारा ताकि तू मक्के के रहने वालों को और जो लोग मक्के के आस-पास हैं उनको डरावे और कयामत के दिन की मुसीबत से डरावे।"

(कुरान, सूरे शूरा)

उपरोक्त दोनों आयतों से क्या यह स्पष्ट नहीं होता कि परमात्मा ने अन्तिम संदेशवाहक को एक सीमित क्षेत्र तक के लिये ही भेजा था ताकि इस क्षेत्र के मूर्तिपूजकों और काफिरों को ईश्वर के दण्ड से भयभीत किया जा सके ? यदि कुरान शरीफ में अन्यत्र यह भी आया हो कि ···"जिसने अपने सेवक (मोहम्मद) पर कुरान उतारा ताकि तमाम दुनियां के लिये डराने वाला हो···" (कुरान, सूरे फुर्कान), तो क्या यह समझा जाये कि 'दुनियां' का अभिप्राय समस्त भौगोलिक संसार से है या यह माना जाये कि मक्का और उसके आस-पास के क्षेत्र को ही तमाम दुनियां का रूप दिया गया है ? यदि तमाम दुनियां का अर्थ सम्पूर्ण भौगोलिक जगत से है तो संसार में जहां-जहां परमात्मा के सन्देशवाहक जन्में, उनकी पूरी सूची पवित्रवाणी कुरान शरीफ में होनी चाहिए थी। यदि श्रीरामचन्द्र जी अल्लाह के रसूल थे तो उनकी भी मिसाल परमात्मा ने किस उद्देश्य से कुरान शरीफ के द्वारा मनुष्यों के सामने नहीं रखी, इस प्रश्न का उत्तर भी मौलाना साहब को देना होगा।

जमाअते-इस्लामी का दावा है कि वह हर बात को दलील और युक्तियों के आधार पर स्वीकार करती है। जमाअत के अनुसार कुरान शरीफ स्वयं ही एक बहुत बड़ी ऐसी दलील है जिसे झुठलाया नहीं जा सकता। कुरान शरीफ की हर बात को परमात्मा ने दलीलों और युक्तियों से सिद्ध करके, मनुष्यों को उसमें आस्था बनाये रखने के लिये प्रेरित किया है। जमाअत के इसी दावे के आधार पर 'रिसालत' (सन्देशवाहक) के प्रश्न को समझने के लिये मैं चाहूँगा कि मौलाना रामनगरी साहब किबला मेरी अन्य शकाओं का समाधान करें।

हजरत मोहम्मद साहब सल्ल० को परमात्मा ने अन्तिम संदेश-वाहक का रूप इसलिये दिया था कि उनके माध्यम से अल्लाह ने दीन इस्लाम को मनुष्य मात्र तक पहुंचाने का कार्य पूर्ण कर लिया था। दीन इस्लाम के पूर्ण हो जाने के पश्चात, मनुष्यों को एकेश्वरवाद की शिक्षा

देने के लिये अब किसी भी सन्देशवाहक की आवश्यकता नहीं है, ऐसा विचार कर विश्व नियन्ता ईश्वर ने प्रलयोपरान्त तक संदेशवाहकों का भेजना बन्द कर दिया। प्रश्न उठता है कि क्या केवल मक्का और उसके आस-पास के क्षेत्रों में इस्लामी तौहीद (एकेश्वरवाद) की सफलता का अर्थ यह लगाया जा सकता है कि, सम्पूर्ण ससार से शिर्क और कुफ्र (मूर्तिपूजा तथा अज्ञान एवं असत्य) समाप्त हो गया है और अब मनुष्यमात्र को ईश्वरीय संदेशवाहकों की आवश्यकता नहीं रह गई है ? सर्वशक्तिमान परमात्मा जो एक लाख चौबीस हजार संदेशवाहकों को भेजकर भी मनुष्यों को एकेश्वरवाद के रास्ते पर पूरी तरह नहीं ला सका, तो यह कैसे माना जा सकता है कि अन्तिम सदेशवाहक हजरत मोहम्मद साहब सल्ल० के कार्यकाल में लोगों ने पूरी तरह परमेश्वर के बताये रास्ते पर चलना आरम्भ कर दिया होगा ? संसार के एक छोटे से स्थान अरब देश में यदि इस्लामी एकेश्वरवाद की विजय पताका फहर उठी तो इसका यह अर्थ नहीं है कि समस्त मानव समाज ने अल्लाह के दीन इस्लाम के आगे गर्दनें झुका दी हैं। जमाअते-इस्लामी के अनुसार आज भी यहूदी, ईसाई, अग्निपूजक और मूर्तिपूजक परमात्मा के सन्देश से दूर हैं, ऐसी स्थिति में क्या यह आवश्यक नहीं है कि परमपिता परमात्मा फिर किसी संदेशवाहक को मानव कल्याणार्थ धरती पर भेजे ?

—०—

कुरान और राजनीति

भारत की जमाअते-इस्लामी नामक कट्टर मुस्लिम संस्था, 'रिसालत' में विश्वास (ईश्वरीय संदेशवाहकों में आस्था) के सिद्धान्त को सर्वोपरि स्वीकार करती है। पवित्र ईश्वरीय वाणी कुरान शरीफ के आधार पर, जमाअते-इस्लामी संसार के समस्त अहले-किताब (ईसाइयों और यहूदियों) से अपेक्षा करती है कि वह लोग कुरान शरीफ को ईश्वरीय वाणी स्वीकार करके, परमात्मा के अन्तिम सन्देशवाहक हजरत मोहम्मद साहब सल्लल्लाहि अलैहि वसल्लम पर अपना ईमान ले आयें। जमाअते-इस्लामी के अनुसार जो लोग कुरान शरीफ को एकमात्र ईस्वरीय ग्रन्थ तथा हजरत मोहम्मद साहब सल्ल० को परमात्मा का अन्तिम संदेशवाहक (पैगम्बर) स्वीकार नहीं करते, वह निश्चय ही काफिर (असत्यवादी) हैं तथा मृत्योपरान्त परमात्मा उन्हें नरक की भयंकर से भयंकर यातनायें देगा। किन्तु जो लोग स्वेच्छा से सत्यवादी बनकर, हजरत मोहम्मद साहब सल्ल० की शरण में आ जायेंगे, तो अल्लाह उन्हें बैकुन्ठ में स्थान देगा। जमाअते-इस्लामी के उपरोक्त कथन की पुष्टि कुरान शरीफ भी करता है। इस ग्रन्थ में सर्वत्र काफिरों (असत्यवादियों) मुनकिरों (अस्वीकार करने वालों) तथा मुश्रिकों (मूर्तिपूजकों एवं बहुदेववादियों) को नरक की यातनाओं से भयभीत किया गया है। कुरान शरीफ और हजरत मोहम्मद साहब सल्ल० पर ईमान न लाने वालों को अल्लाह किस प्रकार से यातनायें देगा, इसकी संक्षिप्त सी झांकी इस प्रकार है :—

"....यह लोग जो किताब को (कुरान को झुठलाते हैं और उन (किताबों) को जो हमने अपने (दूसरे) पैगम्बरों की मार्फत भेजी हैं, सो आखिरकार इनको मालूम हो जायगा जब इनकी गर्दनों में तौक और

जंजीरें होंगी। घसीटते हुये उनको खुलसते पानी में ले जायेंगे फिर आग में झोंके जायेंगे।

(कुरान, सूरे मोमिन)

इसी प्रकार जमाअते-इस्लामी के अनुसार समस्त ईमान वालों (मुसलमानों) को यातनाओं के स्थान पर बैकुन्ठ का अनुपम सुख प्राप्त होगा। यह स्वर्गिक सुख किस प्रकार का है, इसे परमेश्वर के शब्दों द्वारा इस प्रकार प्रकट किया गया है :—

"....जड़ाऊ तख्तों के ऊपर। आमने सामने तकिये लगाये बैठे होंगे। उनके पास लौंडे हैं जो हमेशा (लड़के ही) बने रहेंगे। उनके पास आबखोरे और लोटे और साफ शराब के प्याले लाते और ले जाते होंगे। ...हमने हूरों (सुन्दर स्वर्गिक स्त्री) की एक खास सृष्टि बनाई है। फिर इनको क्वांरी बनाया है। प्यारी-प्यारी समान अवस्था वाली। यह सब दाहिनी तरफ वालों (बैकुन्ठवासी मुसलमानों) के लिये हैं...।"

(कुरान, सूरे वाकिया)

उपरोक्त नारकीय यातनाओं की चिन्ता न करते हुये जिस व्यक्ति ने जीवन के अन्त तक हजरत मोहम्मद साहब सल्ल० के ईश्वरीय सन्देश-वाहक होने में सन्देह प्रकट किया तथा अरब के मूर्तिपूजकों को भी इस बात के लिये प्रेरित किया कि वह लोग हजरत मोहम्मद साहब सल्ल० के भ्रामक प्रचार का विरोध करें, उसका नाम था—अबूजिहल। यह व्यक्ति यद्यपि नाते में हजरत मोहम्मद साहब का चाचा लगता था किन्तु अपने विश्वास में अडिग होने के कारण, उसने नाते-रिश्ते की चिन्ता न करके अपने रिश्ते के भतीजे, हजरत मोहम्मद साहब सल्ल० के प्रचार का डटकर विरोध किया। संसार के समस्त मुसलमान इस अडिग विश्वासी व्यक्ति को घृणा की दृष्टि से देखते हैं। अबूजिहल शब्द का अर्थ है, मूर्खों का पिता —मूर्खाधिराज। यह नाम उन्हें तत्कालीन मुसलमानों ने दिया था, मूलतः उनका नाम कुछ और बताया जाता है। कुरान शरीफ स्वयं इस बात का

गवाह है कि जिस समय हजरत मोहम्मद साहब सल्ल० परमात्मा के आदेश से अपने को अन्तिम ईश्वरीय सन्देशवाहक घोषित कर रहे थे, उस समय भी अनेक काफिर और मुश्रिक इन पर झूठ का आरोप लगाते थे। कुछ उन्हें शायर कहते थे, कुछ पागल कहते थे तथा कुछ ने उन्हें जादूगर कहा था। हजरत मोहम्मद साहब सल्ल० के विरोधियों का कहना था कि यह कुरान शरीफ की आयतें अपने मन से गढ़कर लोगों को सुनाया करते हैं। कुरान शरीफ में अनेक स्थानों पर विपक्षियों के आरोपों का खण्डन करते हुये कहा गया है कि हजरत मोहम्मद साहब सल्ल० न पागल हैं और न जादूगर। कुरान शरीफ में इसीलिये उन्हें उम्मी (सांसारिक शिक्षा से रहित) कहा गया ताकि लोग यह समझें कि उम्मी होने के कारण वह स्वयं कुरान की आयतें नहीं बना सकते। ऐसे ही व्यक्तियों की स्थिति को स्पष्ट करने के लिये परमात्मा ने अपने पैगम्बर हजरत मोहम्मद साहब सल्ल० से कहा :—

"....तुम मुर्दों को नहीं सुना सकते और न बहरों को आवाज सुना सकते हो ऐसी हालत में कि वह पीठ फेरकर भाग खड़े हों। और न तुम अन्धों को गुमराही से राह दिखा सकते हो तुम तो बस उन्हीं को सुना सकते हो जो हमारी आयतों का विश्वास रखते हैं तो वह मान भी जाते हैं।"

(कुरान, सूरे नब)

उपरोक्त विषय के उल्लेख का अभिप्राय यह देखना है कि जमाअते-इस्लामी के अनुसार परमात्मा के अन्तिम सन्देशवाहक हजरत मोहम्मद साहब सल्ल० का विरोध करने वाली शक्तियां उस समय प्रबल रूप से सक्रिय थीं जिन्हें अल्लाह ने 'अन्धा' और 'बहरा' कहकर पुकारा है। यदि वास्तव में परमात्मा यह चाहता है कि सब मनुष्य उसके आदेशों का पालन करें तथा सन्देशवाहकों की बातों पर अमल करें जैसा कि ईश्वरीयवाणी कुरान से प्रकट है फिर क्या कारण है कि परमात्मा की

इच्छा के विरुद्ध 'अन्धे' और 'बहरे' (मूलतः इस्लाम के विरोधी) हजरत मोहम्मद साहब सल्ल० की सत्ता को खुली चुनौती देते हैं और अल्लाह केवल यह कह कर चुप हो जाता है कि अविश्वासी 'मुर्दे' हैं और इन्हें सत्य मार्ग पर नहीं लाया जा सकता। यदि परमात्मा ने हजरत मोहम्मद साहब सल्ल० को अपना सन्देशवाहक बनाकर भेजा था कि वह संसार के लोगों को डरायें तो कोई कारण दिखाई नहीं देता कि सर्वशक्तिमान अल्लाह की इच्छा के विरुद्ध, लोग इन्कारी बनें। इसके विपरीत हजरत मोहम्मद साहब सल्ल० पर ईमान लाने वालों में स्त्रियों में सबसे पहिला नाम उनकी प्रथम पत्नी ह० खदीजा रजि० का और पुरुषों में हजरत अबू बकर सिद्दीक रजि० का तथा बच्चों में उनके चचेरे भाई एवं दामाद ह० अली रजि० का लिया जाता है। ह० खदीजा रजि० मक्के की मालदार धनीमानी महिला थीं। हजरत मोहम्मद साहब सल्ल० ने अपने विवाह से पूर्व अपनी उपरोक्त पहिली पत्नी के यहां कई वर्ष नौकरी की तथा उनके व्यापार को तरक्की पहुंचाने में अपनी सेवायें अर्पित कीं। ह० खदीजा रजि० अपने भावी पति की सेवाओं और ईमानदारी से प्रभावित हुई। विवाह के समय ह० मोहम्मद साहब सल्ल की आयु केवल पच्चीस वर्ष की थी तथा उनकी पत्नी ह० खदीजा रजि० की आयु पचास वर्ष के लगभग थी। आप से पूर्व, ह० खदीजा रजि० के दो विवाह हो चुके थे। अपनी चालीस वर्ष की आयु में हजरत मोहम्मद साहब सल्ल० ने अपने ईश्वरीय सन्देशवाहक होने की घोषणा की तथा कहा कि जिब्राइल नामक एक फरिश्ता मेरे पास आता है और मुझे परमात्मा का सन्देश सुनाता है। प्रश्न उठता है कि क्या सर्वशक्तिमान परमात्मा ने फरिश्तों की सृष्टि की है और यदि की है तो उसका उद्देश्य क्या है ? जमाअते-इस्लामी कहती है कि अल्लाह ने सृष्टि संचालन के विभिन्न कार्यों पर फरिश्तों को नियुक्त कर रखा है। यह एक थोथी दलील है जिस पर मैं पिछले लेखों में प्रकाश डाल चुका हूँ। सृष्टि निर्माण और उसके संचालन के कार्यों में, परमात्मा किसी को न साझेदार बनाता है, न शरीक ठहराता है। यही बातें रसूलों, पैगम्बरों

और सन्देशवाहकों के सम्बन्ध में लागू होती हैं। सृष्टि नियन्ता परमात्मा कभी नहीं चाहता कि मनुष्य उसे पूजें। यह तो मनुष्य का मन है जिसने प्रकृति के विभिन्न रूपों और रहस्यों को समझते हुये परमेश्वर की सत्ता में विश्वास किया और उसकी उपासना की। जमाअते-इस्लामी बताये, आखिर परमात्मा को अपनी पूजा कराने का शौक क्यों चर्राया है ? यदि परमात्मा यही चाहता है कि सब लोग उसे ही पूजें तो ऐसे अहंवादी अल्लाह की सर्वशक्तिमत्ता उस समय नितान्त दरिद्र स्थिति में क्यों हो जाती है जब लोग उसकी कथित वाणी कुरान शरीफ और सन्देशवाहक हजरत मोहम्मद साहब सल्ल० में अविश्वास प्रकट करें और परमात्मा ऐसे लोगों को 'मुर्दा' 'अन्धा' और 'बहरा' कहकर खामोश हो जाये ? सृष्टि नियन्ता को समझने के लिये वस्तुतः न फरिश्तों की जरूरत है और न सन्देशवाहकों की आवश्यकता। उसे समझने के लिये प्रकृति का जागरण ही पर्याप्त है:-

हम ऐसे अहले-नजर को हुसूले हक के लिये
अगर रसूल न होता तो सुबह काफी थी।

ह० मोहम्मद साहब सल्ल० के द्वारा परमात्मा ने कुरान शरीफ में अपने स्वरूप को जिस प्रकार से प्रकट किया है वह निराकार, अनुपम, अद्वितीय एवं सर्वशक्तिमान अल्लाह का स्वरूप नहीं है वरन ऐसे डिक्टेटर का है जो लोगों को नारकीय यातनाओं से आतंकित करके इस बात के लिये विवश करता है कि सब लोग उसके और सन्देशवाहक (हजरत मोहम्मद साहब सल्ल०) के आदेशों का पालन करें। कुरान शरीफ में अल्लाह फरमाता है:-

"और जान रखो कि जो चीज तुम लूट कर लाओ उसका पांचवां भाग खुदा का और पैगम्बर का और पैगम्बर के सम्बन्धियों का ..।"
(कुरान, सूरे अन्फाल, दसवां पारा (वालमू)

बताइये ! यह कैसा परमात्मा है जो मुसलमानों को लूटमार करने की प्रेरणा देकर उस लूट (माले-गनीमत) में से अपना और पैगम्बर

का हिस्सा मांगता है ? शान्ति, समता और एकेश्वरवाद के प्रचारक तथा परमात्मा के अन्तिम सन्देशवाहक ह० मोहम्मद साहब सल्ल० की रिसालत में ईमान रखने वाले जमाअत के उल्मा यह बतायें कि यदि परमात्मा रहमानिर्रहीम (कृपालु और दयालु) है तो उसके सन्देशवाहक पर किस विचार से निम्न आयतें उतरीं जिससे सन्देह होता है कि कुरान शरीफ न तो ईश्वरीय ग्रन्थ है और न ह० मोहम्मद साहब सल्ल० सन्देशवाहक:-

" ··तो जो तुम पर ज्यादती करे, तो जैसी ज्यादती उसने तुम पर की वैसी ज्यादती तुम भी उस पर करो···।"

···"जो लोग तुमसे लड़ें तुम भी अल्लाह के रास्ते में उनसे लड़ो।"

···"अगर वह लोग तुमसे लड़ें तो तुम भी उनका कत्ल करो।"

(कुरान, सूरे बकर)

लड़ाई, खून-खराबा, लूट और हत्या का सन्देश और मनुष्यों को ज्यादती का प्रतिकार ज्यादती से करने की प्रेरणा क्या परमात्मा दे सकता है ? क्षमा, दया और प्रेम की भावना के विपरीत जो सन्देशवाहक प्रतिशोध, प्रतिहिंसा और प्रतिकार का अमानवीय सन्देश मनुष्यों को दे, उसे किस प्रकार कृपालु और दयालु अल्लाह का पैगम्बर कहा जा सकता है, यह निश्चय ही विचारणीय प्रश्न है।

जमाअते-इस्लामी के अनुसार ह० मोहम्मद साहब सल्ल० के अन्तिम ईश्वरीय सन्देशवाहक होने की केवल एक ही दलील है कि ईश्वरीय ग्रन्थ कुरान शरीफ में परमात्मा ने स्वयं उनके रसूल (सन्देशवाहक) होने की घोषणा की है। इसका अभिप्राय यह कि सन्देशवाहक की सत्ता में विश्वास करने के लिये कुरान शरीफ को सर्वप्रथम ईश्वरीय ग्रन्थ मानना होगा। कुरान शरीफ किस प्रकार का ईश्वरीय ग्रन्थ है, इस विषय पर भी मैं पिछले दो लेखों में प्रकाश डाल चुका हूँ। फिर भी यदि ह० मोहम्मद साहब सल्ल० के सन्देशवाहक होने के प्रमाण प्राप्ति के लिये इस ग्रन्थ को

ही आधार बनाना एकमात्र विकल्प है तो मैं इसके लिए भी तैयार हूं। जमाअते इस्लामी के अनुसार परमात्मा ने ईसाई धर्म के प्रवर्तक ह० ईसा अलैहिस्सलाम के पश्चात लगभग ६०० वर्षों तक कोई सन्देशवाहक धरती पर नहीं भेजा। इतना बड़ा काल, किन कारणों से सन्देशवाहकों के अभाव का शिकार रहा, इस पर न तो कुरान शरीफ ही कुछ प्रकाश डालता है और न ही जमाअते इस्लामी कुछ कहने का साहस बटोरती है, पूरे ६०० वर्षों के पश्चात चालीस वर्ष की आयु में अचानक हजरत मोहम्मद साहब सल्ल० ने अपने सन्देशवाहक होने की घोषणा की तथा मक्का की जनता को उन्हें अन्तिम सन्देशवाहक स्वीकार करने तथा उनके द्वारा बनाये हुये मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। पूरे ६०० वर्षों के पश्चात रसूलों और पैगम्बरों के क्रम को पुनः स्थापित करने का उद्देश्य ईश्वरीय था या मानवीय, इस प्रश्न पर भी विचार करने की आवश्यकता समस्त शिक्षित समुदाय को अनुभव होनी स्वाभाविक है। ईश्वरीय उद्देश्य की दृष्टि से कुरान शरीफ में परमात्मा फरमाता है:—

"....ऐ किताब वालो ! (यहूदी और इसाइयों) पैगम्बरों की कमी पड़े पीछे हमारा पैगम्बर तुम्हारे पास आया है ताकि तुम यह न कहो कि हमारे पास कोई खुशखबरी सुनाने वाला और डराने वाला नहीं आया।'

(कुरान, सूरे मायदा)

इसी प्रश्न को मानवीय दृष्टि से समझने के लिये हमें उस काल की आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक परिस्थितियों पर दृष्टिपात करना होगा। ह० मोहम्मद साहब सल्ल० के काल में मक्का और मदीना में राजनीतिक और आर्थिक सत्ता विकेन्द्रित थी तथा वहां राजतन्त्र का उदय नहीं हो पाया था। उस समय दास प्रथा प्रचलित थी तथा कबीलों के सरदार पूर्णतः स्वाधीन और स्वच्छन्द रहते चले आ रहे थे। अलबत्ता इस क्षेत्र के देशों में राजतन्त्र स्थापित थे जिसका प्रभाव धीरे धीरे मक्का और मदीना के क्षेत्र पर पड़ रहा था। इस क्षेत्र में अरबों, यहूदियों और

अल्प संख्या में मुख्यतः यहूदी आबाद थे और सत्य तो यह है कि इस्लाम की विजय का श्रेय मदीने के इन्हीं यहूदियों को है जिन्होंने हजरत मोहम्मद साहब सल्ल० में ईमान लाकर काफिरों से संघर्ष किया तथा इस्लाम की विजय पताका मक्का पर फहरा दी। इतिहास साक्षी है कि सबसे पहले इस्लाम धर्म स्वीकार करने वाली, ईश्वरीय सन्देशवाहक ह० मोहम्मद साहब सल्ल० की प्रथम पत्नी ह० खदीजा रजि० थीं तथा दूसरे व्यक्ति ह० अबू बकर सिद्दीक रजि० थे। यह दोनों ही विभूतियां मक्का की मालदार हस्तियां थीं जिनमें से एक ने ह० मोहम्मद साहब सल्ल० से स्वयं विवाह किया और दूसरे ने कुछ समय पश्चात अपनी पुत्री ह० आयशा रजि० का विवाह उनसे किया था। ह० आयशा रजि० विवाह के समय ह० मोहम्मद साहब सल्ल० से बहुत छोटी थीं। सम्भवतः आप की आयु दस या बारह वर्ष बताई जाती है जबकि आपके पति एवं ईश्वरीय सन्देश-वाहक की आयु पचास को पार कर गई थी। इसी प्रकार इस्लाम के अन्य खलीफा, हजरत उसमान गनी रजि० तथा हजरत उमर फारूक रजि० भी मक्का के प्रभावशाली व्यक्ति थे।

उपरोक्त तथ्यों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि मक्का और मदीना की जनता को पौराणिक गाथाओं के द्वारा संगठित करने का उद्देश्य मूलतः राजनीतिक एवं आर्थिक सत्ता को केन्द्रित करना था। उस काल में राजनीतिक सत्ता को जमाने का एक ही मार्ग था कि मक्का पर अधिकार रखने वाले मूर्तिपूजकों के विरुद्ध, यहूदियों और ईसाइयों को लड़ने के लिये प्रेरित किया जाय। यही कारण है कि कुरान शरीफ में इस्लाम को दीने-इब्राहीमी कहकर पुकारा गया है। ह० इब्राहीम खलीलुल्लाह यहुदियों के पैगम्बर थे और कहा जाता है कि पवित्र काबा की स्थापना उन्होंने ही की थी। सम्पूर्ण कुरान शरीफ में यहूदियों और ईसाइयों की ही पौराणिक गाथाओं का वर्णन है तथा उसमें अल्लाह के नाम पर यह कहलाया गया है कि यहूदी और ईसाई अब ह० मोहम्मद साहब सल्ल० को अपना सन्देशवाहक स्वीकार करें क्योंकि यह तुम्हारे पिछले

धर्मों की ही पैरवी करते हैं। पूरे ६०० वर्षों के पैगम्बरों के अभावपूर्ण वातावरण में अशिक्षित और भोली जनता का इस्लाम में ईमान ले आना स्वाभाविक था। राजनीतिक सत्ताप्राप्ति का लक्ष्य सामने रखकर ही सन्देशवाहकों के आगमन का क्रम बन्द करने की घोषणा की गई ताकि स्थापित सत्ता के विरुद्ध कोई परिवर्तन भविष्य में न हो सके। हजरत मोहम्मद साहब सल्ल० को अन्तिम सन्देशवाहक इसी उद्देश्य से कहा गया है—ऐसा अनुमान भी लगाया जा सकता है।

मैं जानता हूँ कि जमाअते-इस्लामी के उलमा उपरोक्त राजनीतिक एव आर्थिक विश्लेषण को अपने पूर्वाग्रह के कारण स्वीकार नहीं करेंगे। उनका तो एक ही विश्वास है कि कुरान शरीफ को ईश्वरीय ग्रन्थ मानकर, उसके प्रत्येक शब्द को आंख बन्द करके स्वीकार करते जाना ही मनुष्यों का कर्तव्य है। परमात्मा और उसके सन्देशवाहकों के अस्तित्व को तर्क और दर्शन के आधार पर समझने का कोई प्रयास जमाअते-इस्लामी की ओर से आज तक नहीं किया गया। इसका कारण सम्भवतः कुरान शरीफ की निम्न आयतें हैं :—

"...वही है जिसने तुम पर यह किताब (कुरान) उतारी, जिसमें बाज आयत पक्की हैं कि वह असल किताब है और दूसरी सन्देह में डालने वाली, तो जिन लोगों के दिलों में टेढ़ापन है वह तो कुरान की उन्हीं सन्देह वाली आयतों के पीछे पड़े रहते हैं ताकि विरोध पैदा करें और उनके असल मतलब की खोज लगायें। हालांकि अल्लाह के सिवाय उनका असली मतलब किसी को मालूम नहीं और जो लोग इल्म में बड़ी पैठ रखते हैं, वह तो इतना ही कहकर रह जाते हैं कि इस पर हमारा ईमान है..."

(कुरान, सूरे आल इमरान)

उपरोक्त आयतों से स्पष्ट है कि परमात्मा इस बात की आज्ञा देना नहीं चाहता कि मनुष्य जाति अपनी चेतना और विवेक के आधार पर ब्रह्माण्ड और सृष्टि के कर्ता की सत्ता को अनुभव कर सके। एक ओर

जब अल्लाह यह फरमाता है कि हमने तुम पर हर बात खोल खोल कर जाहिर कर दी है फिर क्या कारण है कि वही अल्लाह उपरोक्त आयतों के वास्तविक अर्थों को विवेचनात्मक ढंग से समझने का प्रयत्न करने से मनुष्यों को रोकना चाहता है ? उदाहरण के लिये कुरान शरीफ में दो प्रकार की आयतें हैं—एक मुहकम (पक्की) जिनका अर्थ सरलता से लगाया जा सकता है और दूसरी मुतशाविह। दूसरी प्रकार की इन मुतशाविह आयतों का अर्थ कोई नहीं जानता अथवा जिन्हें विभिन्न पहलुओं से समझने का प्रयत्न किया जाता है। जैसे :—

अलिफ-लाम-मीम, हा-मीम, अलिफ लाम-रा तथा तो-सीन-मीम आदि-आदि ।

कुरान शरीफ में आये उपरोक्त शब्दों का अर्थ कोई नही जानता। जमाअते-इस्लामी पक्की आयतों पर अमल करती है और मुतशाविह आयतों पर यकीन तो रखती है मगर उनके अर्थों के पीछे नहीं पड़ती। यह अजीब मजाक है कि जो सस्था केवल कुरान को ही ईश्वरीय ग्रन्थ होने तथा ह० मोहम्मद साहब सल्ल० के अन्तिम सन्देशवाहक होने का डंका पीट रही हो, वह स्वय ही अपने ग्रन्थ का सही अर्थ लगाने से कतराने लगे, तो इसे बुद्धि का दिवालियापन के अतिरिक्त और क्या कहा जा सकता है।

—०—

इस्लाम और सत्यधर्म

संसार में इस्लामी एकेश्वरवाद (तौहीद) और ईश्वरीय राज्य (हकूमते इलाहिया) की स्थापना का खयाली पुलाव पकाने वाली मुस्लिम संस्था जमाअते-इस्लामी के एक दूसरे नेता जनाब फारूक अनवर भारत-वासियों के आध्यात्मिक पतन से बेहद परेशान नजर आते हैं। जमाअत के मुख पत्र हिन्दी साप्ताहिक 'कान्ति' के विशेषांक में फारूक साहब अपने हृदय की भावना व्यक्त करते हुये लिखते हैं :—

"भारतवासियों के लिये पार्थिव समृद्धि व आध्यात्मिक विकास का एक ही साधन है—सत्य धर्म की स्थापना। इसके अतिरिक्त कोई और दर्शन, सिद्धान्त और वाद ग्रहण करने से कोई लाभ तो क्या होगा, हां उल्टे हानि ही पहुंचेगी—देश को भी और देशवासियों को भी ··।"

भारतवासियों को सत्यधर्म की स्थापना की प्रेरणा देने वाले फारूक साहब की दृष्टि में सत्य धर्म का क्या रूप है, यह छिपा नहीं है। जमाअते-इस्लामी के राजनीतिक स्टैण्ड के आधार पर, कुरान शरीफ द्वारा वर्णित, इस्लामी कथित एकेश्वरवाद से प्रेरित ईश्वरीय राज्य (हकूमते इलाहिया) की स्थापना ही मूलतः सत्यधर्म की स्थापना है। सत्य धर्म के नारे को विवाद और आलोचना से बचाने के लिये फारूक साहब ने "वैदिक सत्य धर्म" से अपना तादात्म्य स्थापित करने की कोशिश की है। उन्होंने नारा दिया है कि वेदों में वर्णित सत्यधर्म मूलतः इस्लामी सत्यधर्म है। फारूक साहब इस सम्बन्ध में फरमाते हैं :—

"—यह भारतवासियों का सौभाग्य है कि यहां वेद और कुरान जैसे दो महान ग्रन्थ पाये जाते हैं। हमारे विचार से सत्यधर्म की ओर वेद-दिशादर्शन करते हैं और कुरान मार्गदर्शन··।"

उपरोक्त कथन से लगता है कि फारूक साहब ने भारत की परिस्थितियों में, इस्लामी सत्यधर्म की मन्जिल तय करने के लिये, वेदों को बैसाखी बनाकर, अपने लड़खड़ाते कदमों को बढ़ाने का प्रयत्न किया है। वेदों की दुहाई देकर वह खन्डन-मन्डन से बचने के लिये कितने ही प्रयत्न कर लें किन्तु आज के जागरुक एवं बौद्धिक जनसमुदाय के समक्ष उन्हें अपने सत्य धर्म के स्वरूप को विज्ञान और दर्शन की कसौटी पर खरा सिद्ध करने की जिम्मेदारी निभानी ही होगी। फारूक साहब को यह खुले रूप से बताना होगा कि कुरान शरीफ किस रूप में भारतीय जनता का मार्गदर्शन करने की क्षमता रखता है और जिन-जिन देशों में कुरान शरीफ ने वहां की जनता का मार्गदर्शन किया है, क्या वहां सत्यधर्म अथवा हकूमते-इलाहिया स्थापित है ? अरब, ईरान, मिस्र, तुर्किस्तान तथा पाकिस्तान आदि मुस्लिम देशों में इस्लामी सत्यधर्म की विजय पताका फहराने की बजाय, जागृत भारत में हकूमते-इलाहिया का खयाली पुलाव पकाने वाले फारूक साहब तथा जमाअते-इस्लामी, किन शक्तियों से प्रेरित होकर भारतीय जनता को आध्यात्मिक विकास के नाम पर, वस्तुतः, इस्लाम का सन्देश सुनाना चाहते हैं—यह एक ज्वलन्त एवं विचारणीय प्रश्न हमारे सामने है। पिछले दिनों से जमाअते-इस्लामी ने अपने मुखपत्र हिन्दी साप्ताहिक 'कान्ति' के माध्यम से कुरान शरीफ और वेदों की मूलभूत भावना को एक सिद्ध करने का अभियान चलाया है। जमाअत के नये पैरोकार श्री दुर्गाशंकर सत्यार्थी, जो वास्तव में मुसलमान (ईमान पर दृढ़) हैं, कुफ्र और ईमान का भेद मिटाने पर तुले हुए हैं। वेदों में इस्लामी शिक्षा सिद्ध करने के लिये मौलवी दुर्गाशंकर सत्यार्थी जमीन और आसमान के कुलावे लगाने के साथ-साथ वेदों का अर्थ करके, जिस ढंग से कार्य कर रहे हैं, उसके विरुद्ध निश्चय ही एक दिन उनका विवेक उन्हें कुरेदेगा।

फारूक साहब की दृष्टि में सत्यधर्म और ईश्वरीय राज्य की स्थापना के लिये समस्त हिन्दू और मुसलमान जनता को यह विश्वास करना होगा कि हजरत मोहम्मद साहब सल्ल० परमात्मा के भेजे हुये

अन्तिम सन्देशवाहक (पैगम्बर) थे तथा कुरान शरीफ परमात्मा की अन्तिम वाणी है। इस विश्वास की पुष्टि के लिए इन सज्जन ने यह प्रचार आरम्भ किया है कि वेदों और कुरान में, एक ही प्रकार की ईश्वरीय शिक्षा है तथा ह० मोहम्मद साहब सल्ल० के ईश्वरीय सन्देश-वाहक अथवा ईश्वरीय दूत होने का प्रमाण वेदों और पुराणों से प्राप्त होता है। इस प्रचार कार्य का श्री गणेश करने वाले मौलवी दुर्गाशंकर सत्यार्थी भी हैं जिन्होंने इस आशय की घोषणा की है कि वेदों में 'मन्त्र' न होकर श्लोक हैं तथा ऋषि अग्नि अल्लाह के भेजे हुए पैगम्बर थे। 'कान्ति' के इसी अंक में एक अन्य लेख प्रकाशित किया गया जिसमें भविष्य पुराण के आधार पर सिद्ध किया गया था कि इस ग्रन्थ में 'महामद' (हजरत मोहम्मद साहब सल्ल०) का वर्णन है तथा आदि पैगम्बर हजरत आदम अलैहिस्सलाम और उनकी पत्नी हव्वा (हव्यवती) का उल्लेख है। मौलवी दुर्गाशंकर सत्यार्थी ने ऋषि अग्नि को पैगम्बर घोषित करके इस्लाम के रिसालत के (ईश्वरीय सन्देशवाहक के भेजे जाने) सिद्धान्त पर सत्यता की मोहर लगा दी है। मौलाना सत्यार्थी ऋषि अग्नि को पैगम्बर कहें चाहे रसूल, यह उनके समझने का प्रश्न है किन्तु 'मन्त्र' और 'श्लोक' के मौलिक अन्तर को न समझने में उनका निश्चय ही कोई मन्तव्य है अन्यथा साधारण संस्कृत जानने वाला भी बता सकता है कि मन्त्र और श्लोक के छन्दों में अन्तर होता है। वेदों की ऋचायें विशेष छन्दबद्ध होने के कारण 'मन्त्र' कहलाती हैं और वेदों के जिन छन्दों में 'श्लोक' शब्द का प्रयोग हुआ है वहां इस शब्द का अर्थ पवित्रता से लिया गया है। 'कान्ति' ने भविष्य पुराण के उद्धरण देकर, ह० मोहम्मद साहब सल्ल० के पैगम्बर होने के जो प्रमाण प्रस्तुत किये हैं, वह विश्वसनीय नहीं कहे जा सकते। आर्य समाज पुराणों को प्रमाणित धार्मिक ग्रन्थ नहीं मानता। ऐतिहासिक दृष्टि से भी पुराणों की रचना सम्भवतः मुगल काल तक होती रही है। अकबर के काल में 'अल्लोपनिषद' नामक ग्रन्थ लिखा गया था जिसमें अरबी, और संस्कृत का सम्मिलित प्रयोग करके, इस्लामी पौराणिक

मान्यताओं को दर्शाया गया था। ठीक इसी प्रकार भविष्य पुराण की रचना भी मुगलकाल में हुई लगती है अथवा प्रक्षिप्त प्रकरणों द्वारा इस ग्रन्थ में ह० मोहम्मद साहब सल्ल० इत्यादि का विषय प्रवेश कराया गया। भविष्य पुराण या इसी प्रकार के अन्य ग्रन्थ जो स्वार्थवश लिखे गये थे, किसी प्रकार माननीय नहीं हैं। जमाअते इस्लामी स्वयं भी मुस्लिम धर्म-ग्रन्थ 'हदीसों' के विषय में यही मत रखती है। जमाअत समस्त उपलब्ध 'हदीसों' को प्रमाणित नहीं मानती। उसका कहना है कि वही 'हदीसें' प्रमाणित हैं जिनकी गवाही पवित्र ईश्वरीय वाणी कुरान शरीफ से मिलती है। ठीक इसी प्रकार पुराणों के विषय में कहा जा सकता है कि भारतीय दर्शन और अध्यात्म से यदि यह ग्रन्थ मेल नहीं खाते, तो उन्हें प्रमाणित नहीं माना जाना चाहिये। भारत में वेदों को सहारा बनाकर, इस्लाम की तबलीग (प्रचार) का कार्य कहां तक सफल हो सकेगा, यह तो भविष्य बतायेगा। अलबत्ता जमाअते-इस्लामी इस विवाद में उलझकर स्वयं को ऐसी स्थिति में ले आयेगी जहां स्वयं मुस्लिम शिक्षित समुदाय के ही प्रश्नों का उत्तर देना उसके लिये कठिन हो जायेगा।

जमाअते-इस्लामी और फारूक अनवर साहब का दूसरा बड़ा विश्वास 'आखिरत' की कल्पना है। संसार के हर मनुष्य को आखिरत की कल्पना में विश्वास रखकर, सत्यधर्म की स्थापना के लिये अग्रसर होना चाहिये—ऐसी इच्छा फारूक साहब रखते हैं। आखिरत का अभिप्राय है—परलोक। इस्लाम धर्म पुनर्जन्म के सिद्धान्त को नहीं मानता। इस्लाम के अनुसार प्रलयोपरान्त कब्रों में गढ़े हुये समस्त मृतमानव (अग्निदाह किये हुओं के विषयों में इस्लाम खामोश है) उठ खड़े होंगे। परमात्मा रोजे-शुमार (अच्छे बुरे कर्मों की गणना का दिन) को उन लोगों को स्वर्ग भेजेगा जो हजरत मोहम्मद साहब सल्ल० पर ईमान ले आये होंग और जो लोग काफिर या मुश्रिक रहे होंगे उन्हें नरक में डाल दिया जायगा। दोनों प्रकार के प्राणी अपने-अपने कर्मों के अनुसार स्वर्ग और नरक में सदैव के लिये प्रविष्ट कर दिये जायेंगे। हिन्दुओं के विश्वास के

विपरीत मनुष्य दुबारा जन्म नहीं लेगा, यह कल्पना ही संक्षेप में इस्लाम की 'आखिरत' है। 'तौहीद' (इस्लाम द्वारा परिभाषित एकेश्वरवाद), 'रिसालत' (ईश्वरीय सदेश में विश्वास), 'तथा आखिरत' (स्वर्ग-नरक में प्रवेश) में अटूट विश्वास रखने के पश्चात ही सत्यधर्म की स्थापना हो सकती है। अस्तु, यही मुनासिब है कि सर्वप्रथम सत्यधर्म के उपरोक्त तीनों प्रेरक विश्वासों को ही दर्शन और तर्क की कसौटी पर कसा जाये।

इस्लामी तौहीद (एकेश्वरवाद) क्या है, इस पर मैं पिछले लेखों में प्रकाश डाल चुका हूँ। कुरान शरीफ में जिन संदर्भों में एकेश्वरवाद को रखा गया है उसके पीछे लम्बी-चौड़ी पौराणिक गाथायें हैं। कुरान शरीफ के अनुसार परमात्मा ने अचानक 'कुन' (हो जा!) कहा जिस पर तुरन्त ही सृष्टि बन गई। इसके पश्चात परमात्मा ने फरिश्तों, जिन्नों और हूरों को बनाया। सब से अन्त में परमात्मा ने मिट्टी से हजरत आदम अलैहि-स्सलाम (सबसे पहिला मनुष्य) को बनाया तथा उनमें अपनी रूह फूंकी। ह० आदम अलैहि० और उनकी पत्नी ह० हव्वा को परमात्मा ने स्वर्ग के बाग में विचरने की अनुमति देने के साथ साथ यह चेतावनी दे दी थी कि अमुक पौधे को न खायें। पश्चात में ईश्वरद्रोही शैतान के बहकावे में आकर, ह० आदम अलैहि० ने वह पौधा खा लिया जिस पर परमात्मा ने क्रुद्ध होकर पति-पत्नी को स्वर्ग के बगीचे से निकाल कर धरती पर भेज दिया। कुरान के अनुसार धरती पर पाई जाने वाली मनुष्य जाति, ह० आदम अलैहि० और उनकी पत्नी हव्वा की सन्तानें हैं। कुरान का कहना है कि ह० आदम अलैहि० सबसे प्रथम ईश्वरीय सन्देश वाहक थे जो मनुष्य जाति के लिये प्रकृति धर्म इस्लाम का सन्देश लाये थे। विचारणीय प्रश्न यह है कि 'ईश्वर', 'जिन्न', 'फरिश्ते' और आदि मानव 'हजरत आदम अलैहि०' के जो वृत्तान्त कुरान शरीफ में हैं और जिन पर फारूक अनवर साहब पूर्ण विश्वास रखते हैं, क्या इन्हें आज के वैज्ञानिक युग में भी अन्धविश्वास के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिये? सर्वशक्तिमान परमात्मा के आदेश के विरुद्ध, स्वर्ग के बाग में वर्जित पौधे को खा लेने

का साहस करने वाले ह० आदम अलैहि० को अल्लाह ने किस आधार पर अपना सन्देशवाहक बनाया, यह बात तर्क की दृष्टि से समझ के बाहर है।

तौहीद, रिसालत और आखिरत में विश्वास की अनिवार्य शर्त सत्यधर्म की स्थापना में सबसे बड़ी बाधा अनुभव होती है, जिसे जमाअते इस्लामी को स्वयं भी महसूस करना चाहिए। फारूक अनवर साहब आगे फरमाते हैं :—

"सत्यधर्म के मूल सिद्धान्त ह० आदम अलैहि० के युग से लेकर प्रलय तक अपरिवर्तनशील हैं। यह सिद्धान्त हैं—एकेश्वरवाद, पुनर्जीवन और ईशदूतत्व। सत्यधर्म में केवल कर्मकान्ड का एक भाग परिवर्तनशील रहा है।"

फारूक साहब का उपरोक्त कथन पूर्णतः विवादास्पद है। यदि ह० आदम अलैहि० से लेकर प्रलय तक के लिये परमात्मा ने सत्यधर्म के मूल सिद्धान्तों को अपरिवर्तनीय एवं अटल बनाया है, तो परमात्मा ने कर्मकान्ड को किस उद्देश्य से परिवर्तनशील किया, इस विषय पर फारूक साहब को प्रकाश डालना चाहिये था। कर्मकाण्ड जिसे शरीयत कहा जाता है, सत्यधर्म पर आधारित होता है। यदि सत्यधर्म के मूल सिद्धान्त अटल हैं तो कर्मकान्ड के किसी भाग को भी परिवर्तनशील नहीं होना चाहिये। जिस प्रकार परमात्मा एक है, उसी प्रकार ईश्वर द्वारा प्रेरित सत्यधर्म और कर्मकाण्ड भी सदैव एक ही रहने चाहिये। क्या जमाअते-इस्लामी यह कहने की जुर्रत कर सकती है कि इस्लामी शरीयत अल्लाह से प्रेरित नहीं है? यदि शरीयत अल्लाह से प्रेरित है तो फिर यह कहना कि कर्मकान्ड (शरीयत) के एक भाग को परमात्मा ने परिवर्तनशील बनाया है, अल्लाह पर तोहमत लगाना है।

आगे बढ़कर फारूक साहब लिखते हैं :—

"अन्तिम ईशदूत हजरत मोहम्मद साहब सल्ल० के बाद न अब कोई और ईशदूत आएगा, और न अब कुरान के बाद और कोई ईश्वरीय ग्रन्थ अवतरित होगा। अब बुद्धि विवेक से काम लेना होगा।"

बड़ी उम्दा बात फारूक साहब फरमा गये हैं। हमें बुद्धि और विवेक से ही काम लेना चाहिये। इस सम्बन्ध में बुद्धि और विवेक के आधार पर फारूक साहब यह बतायें कि परमात्मा को सन्देश वाहकों की आवश्यकता क्यों अनुभव होती है ? आवश्यकता वहीं होती है जहां अभाव रहता है। परमात्मा पूर्ण है, अभाव रहित है, इसलिये वह किसी बात की आवश्यकता अनुभव नहीं करता, न सन्देशवाहकों की, न फरिश्तों की और न अपनी पूजा करने वालों की। यदि एक पल के लिये फारूक साहब की उपरोक्त दलील को मान भी लिया जाये तो उन्हें यह बताना होगा कि सत्यधर्म की स्थापना का सन्देश देने वाले पैगम्बरों की शृङ्खला को हजरत मोहम्मद साहब सल्ल० के पश्चात ही क्यों समाप्त माना जाए ? कुरान के पश्चात अब कोई दूसरा ईश्वरीय ग्रन्थ अवतरित न होगा—ऐसा विश्वास फारूक साहब और मौलवी दुर्गाशंकर सत्यार्थी तथा जमाअते-इस्लामी को पूरी तरह बनाये रखने का अधिकार है किन्तु जब इस कथन को बुद्धि और विवेक का वास्ता दिया जाए तो यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि क्या कुरान वास्तव में ईश्वरीय ग्रन्थ है और इसमें वर्णित एकेश्वरवाद, सन्देशवाहक तथा स्वर्ग-नरक की कल्पना को सत्य मानकर, क्या हम बुद्धि और विवेक से काम ले सकते हैं ?

सत्य धर्म का सही अर्थ "जियों और जीने दो" का सिद्धान्त है। समानाधिकार और सर्व समुत्थान की भावना ही सत्यधर्म है। सत्यधर्म की स्थापना के लिये न तलवार की आवश्यकता है और न जिहाद की जरूरत। यही राहे-हक (सत्यपथ) है जिसमें गाजियों और शहीदों की बजाय, धरती पर रहने वाले ऐसे उदार मानवों की आवश्यकता है जो पृथ्वी को ही स्वर्ग बनाने का संकल्प लिये हुए हों।

—•—

इस्लाम और आखिरत

जमाअते-इस्लामी के नये पैरोकार मौलवी दुर्गाशंकर सत्यार्थी ने जिस फराख-दिली से पवित्र ईश्वरीय ग्रन्थ कुरान शरीफ और वेदों की शिक्षाओं को एक ही स्तर और समान आदर्श पर लाने का नवीन प्रयोग किया है, उसमें सबसे महत्वपूर्ण विषय 'आखिरत' के विश्वास का का है। 'आखिरत' अरबी भाषा का शब्द है जिसका भावार्थ है— प्रलयोपरान्त दूसरा जीवन। जमाअते-इस्लामी के नये प्रवक्ता मौलवी दुर्गाशंकर सत्यार्थी का ईमान (विश्वास) है कि हिन्दुओं के पुनर्जन्म अथवा आवागमन के विश्वास के पूर्णतः विपरीत, इस्लाम के अनुसार मृत्योपरान्त मनुष्य दुबारा जन्म लेकर संसार में नहीं आएगा। इस्लाम धर्म के अनुयाइयों का विश्वास है कि एक निश्चित समय पर परमात्मा प्रलय घोषित करेगा। सृष्टि के विनाश के पश्चात समस्त मृत मानव कब्रों से निकाले जायेंगे तथा कयामत के दिन परमात्मा अच्छे तथा बुरे कर्म करने वालों के कर्मों का फल प्रदान करेगा। मनुष्यों को दिया गया कर्मफल चिरस्थायी रहेगा तथा अनन्त काल तक मनुष्यों को सुख-दुख की अनुभूतियां होती रहेंगी। यही आखिरत का संक्षिप्त भाव है जिस पर प्रत्येक मुसलमान का ईमान अटल होना नितान्त आवश्यक है। जमाअते-इस्लामी 'तौहीद' (एकेश्वरवाद) और 'रिसालत' (ईश्वरीय सन्देशवाहक) में ईमान रखते हुए 'आखिरत' (प्रलयोपरान्त कर्मफल की स्थिति) के विश्वास को भी ईमान का अटूट अंग मानती है। मौलवी दुर्गाशंकर सत्यार्थी ने मुसलमानों के इस विश्वास को कि मृत्योपरान्त पुनर्जन्म नहीं होगा वरन समस्त मनुष्य जाति अपने अपने कर्मों के अनुसार अनन्त काल तक सुख-दुख की ही अनुभूति प्राप्त करती रहेगी, वेदों के आधार पर पुष्ट करने का प्रयास किया है। उनका कहना है कि पवित्र ईश्वरीय ग्रन्थ

कुरान शरीफ की भांति वेदों में भी 'आखिरत' का ही वर्णन है—पुनर्जन्म अथवा आवागमन का नहीं।

जमाअते-इस्लामी के मुख पत्र हिन्दी साप्ताहिक 'कान्ति' के गत ८ जुलाई के अंक में जमाअत के नए पैरोकार मौलवी सत्यार्थी साहब उपरोक्त विषय पर फरमाते हैं :-

"....पुनर्जन्म के आवागमनीय सिद्धान्त असत्य हैं और यह नितान्त अवैदिक एवं वेद विरुद्ध सिद्धान्त हैं। वेद अन्तिम दिन (कयामत का दिन) को मानते हैं और उसी से लोगों को डराते हैं।"

जमाअते-इस्लामी मनुष्य के केवल दो जन्म मानती है। एक मृत्यु से पूर्व का और दूसरा प्रलयोपरान्त जीवित होकर कर्मफल भोगने वाला। जमाअते-इस्लामी हिन्दुओं के इस सिद्धान्त को स्वीकार नहीं करती कि मनुष्य कर्मानुसार विभिन्न योनियों में प्रवेश करता है अथवा पवित्र आत्मायें मोक्ष को प्राप्त होती हैं। वेदों में मृत्योपरान्त जिस 'दिव्यजन्म' का उल्लेख मिलता है, मौलवी दुर्गाशंकर सत्यार्थी उसे पुनर्जन्म न मानकर 'आखिरत' मानते हैं। उनका विश्वास है कि मृत्योपरान्त पुनः दिव्य जन्म होगा अवश्य, किन्तु अनन्त काल तक कर्मफल भोगने के लिये ही होगा, न कि विभिन्न योनियों में प्रवेश करके जीवन और मरण के रूप में। मौलवी सत्यार्थी साहब फरमाते हैं :-

"...यह जीवन जो कि मृत्यु के पश्चात मिलेगा, वेदों में 'दिव्य जन्म, कहकर पुकारा गया है। दिव्य जन्म इसलिये कि फिर इस जन्म में हमें कभी भी मरना न होगा।"

उपरोक्त कथन का अभिप्राय स्पष्ट रूप से यह है कि पवित्र ईश्वरीय ग्रन्थ कुरान शरीफ द्वारा वर्णित 'आखिरत' के सिद्धान्त की पुष्टि संसार के प्राचीनतम ग्रन्थ वेदों से भी की जाए। सम्पूर्ण कुरान शरीफ में स्थान-स्थान पर निश्चय ही मनुष्यों को आखिरत के भय से आतंकित किया गया है। इस ग्रन्थ में परमात्मा ने बराबर यह आदेश दिया है कि मनुष्य केवल एकेश्वरवाद तथा ईशदूतत्व (ह० मोहम्मद साहब सल्ल०

तथा उनसे पूर्व के समस्त पैगम्बर) में ईमान लाकर आखिरत का अनन्त सुख भोगने के लिये प्रयत्नशील हों। कुरान शरीफ में इस बात का स्पष्ट उल्लेख है कि जो लोग ईश्वरीय आदेश के विरुद्ध एकेश्वरवाद तथा ईशदूतत्व में ईमान नहीं लायेंगे तथा मूर्तिपूजा और बहुदेववाद में ही विश्वास करते रहेंगे उन्हें आखिरत में नारकीय यातनायें सहने के लिये अनन्त काल तक के लिये तैयार रहना चाहिये। जमाअते-इस्लामी के मतानुसार एक निश्चित समय पर परमात्मा प्रलय घोषित करेगा तथा प्रलयोपरान्त समस्त मनुष्यों को कब्रों से निकाल कर दुबारा जीवित करेगा ताकि उनके कर्मों का अनन्त काल के लिये निर्णय किया जा सके। पवित्र ईश्वरीय ग्रन्थ कुरान शरीफ में इस स्थिति का वर्णन इस प्रकार है:—

"....और सूर (नरसिंहा) फूंका जायेगा तो जो आसमानों में और जमीन में हैं बेहोश हो जायेंगे मगर जिसको खुदा चाहे (बेहोश न होगा) फिर दुबारा सूर फूंका जायेगा। फिर वे खड़े हो जायेंगे और देखने लगेंगे और जमीन अपने परवरदिगार के नूर से चमक उठेगी और किताबें रख दी जायेंगी और उनमें पैगम्बर गवाह हाजिर किये जायेंगे और उनमें इन्साफ के साथ फैसला कर दिया जायेगा।"

(कुरान, सूरे जुमर)

उपरोक्त आयतों का विस्तृत भाव इस प्रकार प्रकट किया जाता है कि प्रलय के दिन नरसिंहा (शंख) फूंक कर सृष्टि के विनाश किये जाने की घोषणा की जायेगी। यह कार्य परमात्मा के आदेश से हजरत मेंहदी अलैहिस्सलाम जो इमाम कहलाये जाते हैं, करेंगे। प्रलय के दिन आसमान फट जायेंगे, पहाड़ रुई के बादल हो जायेंगे तथा धरती खण्ड-खण्ड होकर सृष्टि के विनाश की सूचना देगी। समस्त मनुष्य जाति नष्ट हो जायेगी तथा गड़े हुये मुर्दे कब्रों से निकल कर परमात्मा के निकट एकत्र होंगे। पश्चात में परमात्मा अपने सन्देशवाहकों के सामने मनुष्यों के कर्मों का लेखा देखकर, उन्हें कर्म फल देगा। पवित्र ईश्वरीय ग्रन्थ कुरान

शरीफ में कयामत (प्रलय) का कोई निश्चित दिन नहीं बताया गया है और न ही यह उल्लेख मिलता है कि प्रलय के कितने दिनों के पश्चात मनुष्यों के कर्मफल का निर्णय किया जायगा। जमाअते-इस्लामी का विश्वास है कि एक दिन प्रलय अवश्य होगी तथा कर्मफल के निर्णय के आधार पर ह० मोहम्मद साहब सल्ल० पर ईमान रखने वाले मुसलमान व्यक्ति स्वर्ग का सुख भोगते रहेंगे। जो लोग इस्लाम धर्म की शरण में नहीं आएंगे तथा परमात्मा के आदेश के विरुद्ध मूर्तिपूजा का मार्ग अपनाते रहेंगे, वह यकीनन नरक में डाले जायेंगे। यह पापी अनन्त काल तक नारकीय यातनायें ही भोगते रहेंगे।

परमात्मा फरमाता है:—

"इकट्ठा करने के दिन, जिस दिन वह तुम्हें इकट्ठा करेगा वह दिन हार जीत का है और जो कोई खुदा पर ईमान लाए और नेक काम करे तो वह उसकी बुराइयां दूर करेगा और बैकुण्ठ में दाखिल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती हैं उसमें वह हमेशा रहेंगे यह बड़ी कामयाबी है और जो काफिर हुये और हमारी आयतों को झुठलाया वह नरकवासी हैं। उसमें हमेशा रहेंगे और वह बुरी जगह है। (कुरान, सूरे तगाबुन)

मौलवी दुर्गाशंकर सत्यार्थी पुनर्जन्म के सिद्धान्त में विश्वास न करके, आखिरत में ही आस्था रखते हैं। वेदों में पुनर्जन्म है या नहीं, इस पर विद्वानों के दो मत हैं। आर्य समाजी तथा सनातनी विद्वान वेदों में पुनर्जन्म पाते हैं। उपनिषदों में वर्णित पुनर्जन्म का विषय वेदों पर ही आधारित है। अलबत्ता महापंडित राहुल सांकृत्यायन जैसे मार्क्सवादी विद्वानों ने वेदों में पुनर्जन्म को स्वीकार नहीं किया है। मौलवी दुर्गाशंकर सत्यार्थी ने अपने इसी लेख में राहुल जी का उद्धरण भी दिया है किन्तु इससे यह सिद्ध नहीं होता कि कुरान में वर्णित आखिरत का सिद्धान्त ही सही है। राहुल जी ने ही नहीं, वरन आचार्य बृहस्पति जिन्हें चार्वाक दर्शन

का जनक कहा जाता है, उन्होंने भी पुनर्जन्म को स्वीकार नहीं किया है। आज भी भारत और संसार के अन्य देशों में ऐसे व्यक्ति हैं जो पुनर्जन्म और आत्मा-परमात्मा के अस्तित्व में ही विश्वास नहीं रखते। यही बात आखिरत के सिद्धान्त पर लागू होती है। मौलवी दुर्गाशंकर सत्यार्थी साहब के पास यदि थोड़ा सा भी विवेक है तो उन्हें सोचना चाहिये कि जमीन में गढ़ जाने के पश्चात क्या हजारों और सैकड़ों वर्षों के मृत मानव पुनः जीवित निकल सकते हैं ? पंचतत्व में मिल जाने वाला शरीर पुनः किस प्रकार जीवित हो सकेगा और यदि होगा तो उन मृत मानवों की आत्मायें कहां भटकती फिर रही हैं, इस विषय पर मौलवी सत्यार्थी साहब को प्रकाश डालना चाहिये। सम्पूर्ण कुरान शरीफ में आत्मा के विषय में कोई विशेष उल्लेख नहीं मिलता है। आत्मा क्या है और इसका क्या कार्य है, इस प्रश्न पर परमात्मा पूर्णतः मौन रहता है। एक स्थान पर पवित्र ईश्वरीय ग्रन्थ कुरान शरीफ में आत्मा के विषय में संक्षिप्त सा उल्लेख मिलता है:—

"—(ऐ पैगम्बर) रूह की बाबत तुमसे पूछते हैं तो कहदो रूह मेरे परवर्दिगार की तरफ से है और तुम लोगों को थोड़ा ही इल्म दिया गया है।"

(कुरान, सूरे बनी इसराईल)

उपरोक्त आयतों के सम्बन्ध में कहा जाता है कि जब अरब के मूर्तिपूजकों ने परमात्मा के अन्तिम सन्देशवाहक ह० मोहम्मद साहब सल्ल० से आत्मा के अस्तित्व और कार्य के विषय में प्रश्न किया तो परमात्मा ने उत्तर में केवल इतना ही कहलाया कि आत्मा अल्लाह की ओर से (हुक्मे-रब्बी) है। बस इसके आगे जानने की योग्यता और जिज्ञासा परमात्मा ने मनुष्यों को नहीं दी है। महान आश्चर्य है कि संसार के प्राचीनतम ग्रन्थ वेदों और उपनिषदों में आत्मा के अस्तित्व और कार्य का विशद वर्णन मिलता है किन्तु अन्तिम ईश्वरीय ग्रन्थ (मौलवी सत्यार्थी साहब के मता-

नुसार) कुरान शरीफ में आत्मा के विषय में न तो विशेष उल्लेख मिलता है और न ही इस विषय पर विचार करने की शक्ति प्रदान की गई है। स्पष्ट है कि कुरान शरीफ का उद्देश्य केवल मूर्तिपूजकों को परमात्मा के दण्ड से आतंकित करना था जिसके लिये आखिरत में विश्वास कराना आवश्यक समझा गया था। परिणामतः आखिरत में अनन्त काल तक सुख भोगने के लिये अरब के मुसलमान जिहाद (सत्यपथ के लिये किया जाने वाला संघर्ष) में सम्मिलित हुये। इन मुजाहिदों (जिहाद करने वालों) में जो गाजी बनेंगे वह तो स्वर्ग में प्रवेश करेंगे ही किन्तु जो शहीद होंगे वह भी स्वर्ग में जायेंगे। गाजी का अर्थ है युद्ध में काफिरों पर विजय प्राप्त करने वाला तथा शहीद उसे कहते हैं जो युद्ध में मृत्यु को प्राप्त हो। इस्लाम के मतानुसार धर्मयुद्ध में भाग लेने वाले गाजियों और शहीदों को परमात्मा स्वर्ग में प्रविष्ट करेगा। स्वर्ग में प्रवेश पाने वाले मुसलमानों को वहां भी वही सुख प्राप्त होंगे जो इस संसार में पाये जाते हैं। परमात्मा मुसलमानों को किस प्रकार का स्वर्गिक सुख प्रदान करेगा, उसकी झांकी इस प्रकार है:—

"...और जैसे कर्म तुम करते थे तुमको उन्हीं का बदला दिया जायेगा। परहेजगार (बैकुन्ठ के) बागों और नियामतों में होंगे। अपने परवर्दिगार की दी हुई (नियामतों के) मजे उड़ा रहे होंगे और उनके परवर्दिगार ने उनको नरक की सजा से बचा लिया। खाओ पिओ रुचि से अपने कर्मों का बदला है। तख्तों पर जो बराबर बिछाये गये हैं तकिये लगा लगाकर बैठे हैं और हमने बड़ी-बड़ी आंखों वाली हूरें उनको व्याह दी हैं—और जिस मेवे और मांस को उनका जी चाहेगा हम उनको देवेंगे। वह आपस में वहां (शराब के) प्यालों की छीना झपटी करेंगे—और लड़के उनके पास आयेंगे-जायेंगे गोया यत्न से रखे हुये मोती हैं—कहेंगे कि हम पहले अपने घरों में डरा करते थे।"

(कुरान, सूरे तूर)

यही वह स्वर्गिक सुख है जिसकी प्राप्ति के लिये परमपिता परमात्मा ने मनुष्यों को प्रकृति धर्म इस्लाम को अपनाने के लिये प्रेरित किया। इसी सुख की प्राप्ति के लिये लाखों की संख्या में गाजी और शहीद सिर पर कफन बांध कर जिहाद (सत्यपथ के लिये किया गया संघर्ष) के मैदान में उतर पड़े थे। इसी अनन्त कालीन सुख की चाह के लिये काफिरों और मुजाहिदों (जिहाद करने वालों) में भयंकर युद्ध हुये और इसी अनन्त सुख की लालसा से प्रेरित होकर पाकिस्तान ने भारत पर आक्रमण किया था। पाकिस्तान ने अपनी सेना में जिहाद की भावना उत्पन्न की थी जिससे भारत-पाक युद्ध को धर्मयुद्ध का रूप दिया जा सके। आजाद कश्मीर रेडियो के 'मेरे वतन' प्रोग्राम का प्रसिद्ध संगीत-रिकार्ड इसी उद्देश्य से बजाया जाता है ताकि पाक-सेना धर्मयुद्ध में भाग लेकर स्वर्गिक सुख की अधिकारी बन सके। रिकार्ड के बोल हैं—"ऐ ! मर्दे-मुजाहिद जाग जरा, अब वक्ते-शहादत है आया।" इस पंक्ति का अर्थ है कि "सत्यपथ (धर्म-युद्ध) के लिये संघर्षशील वीरों जागो कि अब हुतात्मा (शहीद) होने का समय निकट आ गया है।"

क्या मौलवी दुर्गाशंकर सत्यार्थी बतायेंगे कि शराब के प्यालों, हूरों और लड़कों (गिल्मों) के अनन्त कालीन स्वर्गिक सुख का इतना महत्व है कि इसके लिये धरती को मनुष्यों के रक्त से रंग दिया जाये ? क्या कृपालु और दयालु परमात्मा की यही इच्छा है कि लोग आखिरत की कामना से लड़ें और मारें-मरें ? मेरा विचार है कि सत्यार्थी साहब इससे सहमत नहीं होंगे। वह तो इस्लाम को शान्ति का अलम्बरदार मानते हैं। मैं भी इस्लाम को प्रकृति-धर्म होने के नाते शान्ति का प्रतीक मानता हूं किन्तु आश्चर्य तो उस समय होता है जब तौहीद (एकेश्वरवाद) के सिद्धान्त को शान्ति पूर्ण ढंग से प्रचारित करने की बजाय, भिन्नमत और विचार (मूर्तिपूजकों, बहुदेववादियों और काफिरों) के व्यक्तियों को नारकीय यातनाओं से डराया जाए तथा मुसलमानों को इस बात के लिये उकसाया जाए कि वह दर्शन, युक्ति, तर्क और शास्त्रार्थ के स्थान पर अपने से भिन्न विचार

वालों के प्रति घृणा का भाव प्रकट करें। पवित्र ईश्वरीय ग्रन्थ कुरान शरीफ को मौलवी सत्यार्थी साहब अक्षरशः 'कलामे रब्बानी' (ईश्वरीय वाणी) मानते हैं। सत्यार्थी साहब इसी महान ग्रन्थ के आधार पर संसार में प्रेम, दया, क्षमा और सत्य विचारों का प्रचार करना चाहते हैं किन्तु क्या वह बतायेंगे कि इस ग्रन्थ में निम्नलिखित आयतों का अर्थ क्या उपरोक्त विचारों के प्रचार एवं प्रसार में सहायक होता है ?—

"---तुम उनमें से बहुतेरों को देखोगे कि काफिरों से दोस्ती रखते हैं उन्होंने अपने लिये बुरी तैयारी भेजी है कि खुदा उनसे नाराज हुआ और यह हमेशा सजा में रहेंगे और अगर अल्लाह पर और पैगम्बर पर और जो किताब उन पर उतरी उस पर ईमान रखते होते तो काफिरों को मित्र न बनाते लेकिन इनमें से बहुतेरे बेहुक्म हैं।"

(कुरान, सूरे मायदा)

मौलवी सत्यार्थी साहब बतायें कि क्या उपरोक्त आयतें मुसलमानों को इस बात का ईश्वरीय आदेश नहीं सुनातीं कि काफिरों (भिन्न मतानुयाइयों) को मित्र न बनाया जाय ? क्या भिन्न विचार और आस्था के व्यक्ति मानवीय स्तर पर हमारी मित्रता के पात्र नहीं हो सकते ? क्या कुरान सम्मत तौहीद (एकेश्वरवाद), रिसालत (सन्देशवाहक) और आखिरत (स्वर्ग-नरक की स्थिति) में सिद्धान्तवश विश्वास न करने वाले व्यक्ति, नेक और धर्मपरायण परहेजगार मुसलमानों के मित्र नहीं बन सकते ? क्या मुसलमान इस बात में विश्वास करें कि मूर्तिपूजक और अस्वीकारी नरक में डाले जायेंगे जहां शराब, हूरों और लड़कों (गिल्मों) के सुख के स्थान पर, इन काफिरों को सेंहुड़ का पेड़ खाने को दिया जायगा तथा खौलता हुआ पानी पिलाया जाएगा ?

पवित्र ईश्वरीय वाणी कुरान शरीफ में मूर्तिपूजकों को जिस प्रकार की नारकीय यातनायें अनन्त काल तक सहना होंगी, उनका वर्णन देखिये:—

" कि वह आंच की भाप और गरम पानी में होंगे और धुयें की छाओं में। जो न ठण्डी है और न इज्जत की। — फिर ऐ! झुठलाने वाले गुमराहों! तुम को (नरक में) सेंहुड़ का दरख्त खाना होगा और उसी से पेट भरना पड़ेगा फिर ऊपर से उबलता हुआ पानी पीना होगा। फिर ऐसे पीओगे जैसे प्यासे ऊंट पीते हैं। न्याय के दिन यही उनकी मेह-मानी है —।"

(कुरान, सूरे वाकिया)

मौलवी सत्यार्थी साहब की दृष्टि में स्वर्ग और नरक की यही तस्वीर है। वह एक नेक मुसलमान (ईमान पर दृढ़ व्यक्ति) के रूप में स्वर्ग का अनन्त कालीन सुख प्राप्त करना चाहते हैं—'अनन्त कालीन' दैहिक स्वर्गिक सुख की प्राप्ति, ताकि पुनः जन्म लेकर संसार में न आना पड़े। यही उनकी आखिरत है और यही उनका ईमान। मौलवी दुर्गाशंकर सत्यार्थी साहब ने आखिरत के सिद्धान्त की पुष्टि वेदों से की हो या न की हो, लेकिन उन्हें दर्शन, तर्क और विज्ञान से अपने मत की पुष्टि अवश्य करनी चाहिये। उनकी सेवा में निम्न प्रश्न रख रहा हूँः—

१-क्या पंचतत्व में मिल जाने के पश्चात शरीर पुनः जीवित हो सकता है?

२-क्या प्रलय का दिन परमात्मा ने निश्चित कर रखा है? यदि निश्चित है तो ईश्वरीय ग्रन्थ कुरान शरीफ में इसका उल्लेख क्यों नहीं है?

३-क्या स्वर्ग और नरक किसी निश्चित स्थान पर बने हैं? यदि हैं तो वह स्थान कहा है?

४-आत्मा और शरीर का क्या सम्बन्ध है? आत्मा के विषय में अधिक जानने और पूछने की अनुमति परमात्मा ने मनुष्यों को क्यों नहीं दी?

उपरोक्त प्रश्नों का उत्तर देकर मौलवी सत्यार्थी साहब निश्चय ही अपने मत की पुष्टि का प्रमाण प्रस्तुत करेंगे, ऐसी आशा मुझे है।

पवित्र ईश्वरीय ग्रन्थ कुरान शरीफ के द्वारा परमात्मा ने लोगों को आखिरत की ओर उन्मुख होने के लिये प्रेरित किया हैं। किन्तु वहीं पर परमात्मा यह भी कहता है कि हमने कुछ लोगों के लिये नरक का स्थायी निवास सुरक्षित रख छोड़ा है, जिसका अभिप्राय यह है कि कुछ लोगों को नारकीय यातनायें सहने के लिये ही परमात्मा ने उत्पन्न किया है। यदि परमात्मा ने नारकीय प्राणियों को पहले ही उत्पन्न कर दिया तो उन्हें आखिरत के लिये कितना ही प्रेरित किया जाये, वह स्वर्ग के सुख की प्राप्ति के लिये अग्रसर नहीं हो सकते। कुरान शरीफ में परमात्मा फरमाता हैः—

"--(ऐ पैगम्बर) जब तुम कुरान पढ़ते हो तो हम तुम में और उन लोगों में जिनको कयामत का विश्वास नहीं एक परदा कर देते हैं। उनके दिलों पर आड़ रखते हैं ताकि कुरान को समझ न सकें और उनके कानों में (एक तरह का) बोझ डालते हैं ताकि सुन न सके।"

(कुरान, सूरे बनी इसराइल)

इन आयतों से स्पष्ट है कि परमात्मा कुछ व्यक्तियों को अपने पवित्र सन्देश से वंचित ही रखना चाहता है और इन अकिंचन प्राणियों को अकारण ही नरक में डालने पर तुला हुआ है। यदि यह परमात्मा का न्याय है तो ऐसे एकेश्वरवाद और ऐसी आखिरत में मनुष्यों का विश्वास क्यों कर हो सकेगा, यह प्रश्न निश्चय ही विचारणीय है।

—०—

जमाअते-इस्लामी और राष्ट्रीयता का प्रश्न

भारतीय जमाअते-इस्लामी ने राष्ट्रीय एकता के लिये भी प्रयास करने का बीड़ा उठाया है। भारत विभाजन के पश्चात से देश के मुसलमानों की जो नगण्य स्थिति हो गई थी उसके कारणों की खोज करने की बजाय, जमाअते-इस्लामी हिन्दु और मुसलमानों को किस प्रकार की राष्ट्रीय एकता का सन्देश देना चाहती है, इस पर यद्यपि स्पष्ट रूप से अधिक नहीं कहा गया है तथापि जमाअत अपनी रूढ़िगत मान्यताओं और कोरे विश्वासों के आधार पर जिस राष्ट्रीय एकता को साकार देखना चाहती है, वह खुले रूप से इस्लाम के प्रचार एवं प्रसार के अतिरिक्त कुछ नहीं है। भारत की समस्त जातियों और धर्मानुयाइयों में सौहार्द की भावना उत्पन्न हो तथा सभी इस देश को अपनी जन्मभूमि समझकर इसके विकास और समृद्धि के लिये एक जूट होकर कार्य करें. यही मूलतः राष्ट्रीय एकता है। भारत के हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख और ईसाई आदि जितने भी व्यक्ति इस देश में रहते हैं, सबको सामान्य सिद्धान्तों पर एकता का परिचय देना होगा तथा सबकी समान समृद्धि को अपनी उन्नति समझकर कटुता और द्वेष के वातावरण को समाप्त करना राष्ट्रीय एकता के लिये किये जाने वाले प्रयासों का प्रमाण होना चाहिये। जमाअते-इस्लामी के नए पैरोकार मौलवी दुर्गाशंकर सत्यार्थी का विचार है कि उनकी संस्था राष्ट्रीय एकता के लिये विशेष प्रयत्नशील है। जमाअत के मुख-पत्र हिन्दी साप्ताहिक 'कान्ति' के १५ जुलाई ६९ के अंक में प्रकाशित 'कान्ति' की त्रैमासिक रिपोर्ट में मौलवी सत्यार्थी साहब फरमाते हैं कि —"राष्ट्रीय एकता हिन्दुस्तान की एक ज्वलन्त समस्या है। 'कान्ति' ने राष्ट्रीय एकता अभियान को जो नई दिशा दी है उसके लिये सम्पूर्ण राष्ट्र को 'कान्ति' का आभारी होना

चाहिये। 'कान्ति' एक ऐसा पत्र है जिसने पहली बार हिन्दुओं और मुसलमानों को धार्मिक रूप से एकत्रित एवं संगठित करके एक सूत्र में बांधने का प्रयास किया है। 'कान्ति' के पाठक महसूस करते हैं कि 'कान्ति' के हृदय में हिन्दुस्तान के लिये कितना दर्द है।"

जमाअते-इस्लामी के नए पैरोकार मौलवी दुर्गाशंकर सत्यार्थी ने अपने उपरोक्त शब्दों में जिस प्रकार की राष्ट्रीय एकता को साकार देखना चाहा है उसका आधार हिन्दु और मुसलमानों का धार्मिक रूप से एकत्रीकरण एवं संगठनीकरण ही है। मौलवी सत्यार्थी साहब का विश्वास है कि धार्मिक एकत्रीकरण के अभाव के कारण ही भारत में अराष्ट्रीयता को पनपने का अवसर मिला है। यह धार्मिक एकत्रीकरण क्या है और कैसे होगा, इस सम्बन्ध में मौलवी सत्यार्थी साहब खुलकर कुछ नहीं कह पा सके हैं किन्तु जमाअते-इस्लामी की गतिविधियां तथा विचार और आस्थाओं से स्पष्ट है कि भारत में राष्ट्रीयता के वातावरण को जन्म देने के लिये यह प्रथम शर्त होगी कि देश के समस्त अमुस्लिम (मूलतः हिन्दु जनता) इस्लामी आस्थाओं और मान्यताओं को स्वीकार करें। जमाअते-इस्लामी के अनुसार मुसलमानों के धर्मग्रन्थ कुरान शरीफ और आर्यों (हिन्दुओं) के धर्मग्रन्थ वेदों में वर्णित ईश्वरीय विषय एक ही प्रकार का है। जमाअते-इस्लामी दोनों ग्रन्थों को ईश्वरीय ग्रन्थ मानकर चलने भी लगी है और उसका कहना है कि इन दोनों ग्रन्थों के विश्वासी लोग एकेश्वरवाद (तौहीद) के नाम पर एक हो सकते हैं। इसमें कुछ लोगों का यह भी विश्वास है कि वेद आदि ईश्वरीय ग्रन्थ थे तथा कुरान शरीफ अन्तिम ईश्वरीय वाणी है। दोनों ही ग्रन्थों में परमात्मा ने एक ही प्रकार की एकेश्वरवादी शिक्षायें मनुष्यों को दी हैं यदि दोनों ग्रन्थों के अनुयायी पूर्वाग्रहों को त्याग कर सत्य को परखें तो वेदों और कुरान शरीफ में कोई अन्तर नहीं दिखाई देगा। जमाअते-इस्लामी अपने इस विश्वास को यहां तक दृढ़ता से प्रकट करने पर तुली है कि इस्लामी मान्यतानुसार पैगम्बरों

का आगमन (ईश्वरीय संदेशवाहकों का अवतरण जैसे ह० मूसा, ह० ईसा तथा ह० मोहम्मद साहब सल्ल० आदि) तथा आखिरत (मृत्योपरान्त कर्मफल की अनन्त कालीन अनुभूति) के सिद्धान्त की पुष्टि आदि ईश्वरीय ग्रन्थ वेदों से होती है। अपने इसी विश्वास को प्रकट करते हुये जमाअते-इश्लामी के नये पैरोकार मौलवी दुर्गाशंकर सत्यार्थी साहब ने आर्य समाज के प्रवर्तक ऋषि दयानन्द सरस्वती द्वारा किये गये खन्डन को गलत ठहराया है। मौलवी साहब के अनुसार ऋषि दयानन्द सरस्वती ने 'सत्यार्थ प्रकाश' में कुरान शरीफ के एकेश्वरवाद, ईश्वरीय सन्देशवाहकों के आगमन तथा मृत्योपरान्त स्वर्ग-नरक की अनन्त कालीन स्थिति का जिस प्रकार से खन्डन किया है वह अज्ञान पर आधारित है। ऋषि दयानन्द सरस्वती द्वारा भाषित ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका को मौलवी सत्यार्थी साहब गलत मानते हैं। ऋषि के भाष्य से असहमति प्रकट करते हुये इस्लाम धर्म के कट्टर अनुयायी मौलवी सत्यार्थी साहब लिखते हैं :—

"आचार्य दयानन्द सरस्वती हालांकि इन बातों में पाक साफ थे, मगर निरुक्त वेदांग के चक्कर से ये भी न बच सके। उन्होंने निरुक्त वेदांग के आधार पर वेदों की व्याख्या कर दी और निरुक्त वेदांग खुद कितने गलत है, यह नहीं सोचा। ... इसी कारण उनकी बातें कहीं कहीं बड़ी भ्रामक नजर आती हैं।" (वहीं)

मौलवी सत्यार्थी साहब ने दयानन्द सरस्वती के नाम के साथ न ऋषि शब्द का प्रयोग किया न स्वामी का, जब कि यह दोनों शब्द उनके नाम के साथ लगाये जाते रहे हैं। आपने 'आचार्य' शब्द का प्रयोग किस उद्देश्य से किया है, यह स्पष्ट है। ऋषि अथवा स्वामी शब्दों से जो सम्मान का भाव प्रकट होता है, मौलवी सत्यार्थी साहब नहीं चाहते कि वह सम्मान किसी प्रकार भी आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द को प्राप्त हो जाये। क्या सत्यार्थी साहब बतायेंगे कि इस्लाम धर्म के पैगम्बर ह० मोहम्मद साहब सल्लाहि अलैहिवसल्लम के नाम के आगे पीछे इतने

सम्मानजनक शब्दों का प्रयोग किस लिये किया जाना चाहिये ? इस्लाम के अन्य समस्त 'साहबा', 'खलीफा' तथा 'इमामों' आदि के नाम के आगे पीछे 'हजरत' तथा 'रहमतुल्लाहअलए' लगाया जाना क्यों आवश्यक है ? यह शब्द केवल सम्मान के सूचक होते हैं जिनका प्रयोग शिष्टता और सभ्यता का द्योतक होता है। मौलवी सत्यार्थी साहब इस्लाम के नये अनुयायी होने के नाते, साधारण शिष्टता को भूल बैठे तथा आर्य समाज के जन्मदाता को ऋषि और स्वामी शब्द के स्थान पर 'आचार्य' शब्द से सम्बोधित करके वही गल्ती कर बैठे जैसे कोई अमुस्लिम ह० मोहम्मद साहब सल्ल० को 'मौलवी मोहम्मद' लिखने की गल्ती कर बैठता है। ऋषि दयानन्द सरस्वती ने अपने भाष्य में क्या-क्या गल्तियां की हैं उनका स्पष्ट उल्लेख किया जाना आवश्यक है। केवल इतना कह देने भर से कि उनकी बातें भ्रामक नजर आती हैं, सत्य को छिपाना है-उजागर करना नहीं।

मौलवी दुर्गाशंकर सत्यार्थी जिस राष्ट्रीय एकता की बात करते हैं, उसकी स्थापना में सब से बड़ी रुकावट स्वयं सत्यार्थी साहब तथा उनकी संस्था जमाअते इस्लामी के पूर्वाग्रह और मिथ्या विश्वास हैं। धार्मिक एकत्रीकरण के लिये विचारों में उदारता का होना नितान्त आवश्यक है जिसके लिये जमाअते-इस्लामी को आगे आना होगा। भारत का विभाजन हिन्दु-मुसलमान के आधार पर हुआ था। आज यदि जमाअते-इस्लामी हिन्दु-मुसलमान का भेद मिटाकर, समस्त एकेश्वरवादियों का धार्मिक एकत्रीकरण करके राष्ट्रीयता को जन्म देना चाहती है, तो उसे चाहिये कि भारत और पाकिस्तान के पुनः एकीकरण के लिये सम्मिलित प्रयत्न किया जाये। अल्लाह के फजलो-करम से जमाअते-इस्लामी के जन्मदाता मौलाना अबूआला मौदूदी साहब पाकिस्तान में हैं। उन्हें चाहिये कि भारत और पाकिस्तान की जनता को सत्यपथ पर चलने के लिये प्रेरित करने से पूर्व, दोनों देशों के एकत्रीकरण का नारा बुलन्द करें ताकि 'एकेश्वरवादी राष्ट्रीयता' को साकार होने का अवसर मिल सके। खेद है कि भारत की

जमाअते-इस्लामी के नये पैरोकार मौलवी दुर्गाशंकर सत्यार्थी साहब अपने नेता मौलवी अबूआला मौदूदी साहब से अपेक्षा करने की बजाय भारतीय जनता से यह आशा रखते हैं कि वह धार्मिक एकत्रीकरण के लिये आगे बढ़े तथा इस्लाम और वैदिक धर्म को एक मानकर वास्तविक राष्ट्रीयता को जन्म दे। मौलवी सत्यार्थी साहब के विचारानुसार सच्ची राष्ट्रीयता के लिये यह आवश्यक है कि इस्लाम और वैदिक धर्म को एक माना जाये। इन दोनों धर्मों को क्योंकर एक माना जाना चाहिये, इस पर जमाअते-इस्लामी वाद-विवाद तथा शास्त्रार्थ के पक्ष में नहीं है। वह तो केवल यही चाहती है कि भारत के हिन्दू और मुसलमान, वेदों और कुरान शरीफ को ईश्वरीय ग्रन्थ मानें। यह एक अजीब मजाक है कि जमाअते-इस्लामी दोनों ग्रन्थों को ईश्वरीय ग्रन्थ तो बताती है किन्तु एकेश्वरवाद के नाम पर कुरान शरीफ में जो विरोधाभास पाया जाता है, उस प्रश्न पर चर्चा करने से कतराती है। तब क्या यह समझा जाये कि मौलवी दुर्गाशंकर सत्यार्थी का राष्ट्रीय एकता और धार्मिक एकत्रीकरण का नारा बुद्धि और विवेक पर आधारित न होकर, महज एक लफ्फाजी है जिसका अर्थ है — "मन तुरा हाजी बगोयम, तू मिरा मुल्ला बगो।" अभिप्राय यह कि तू मुझे हाजी कहे जा और मैं तुझे मुल्ला कहे जाऊं, ताकि तेरे साथ ही मेरी भी इज्जत बनी रहे।

मौलवी दुर्गाशंकर सत्यार्थी साहब तथा उनकी संस्था जमाअते-इस्लामी, केवल एकेश्वरवादियों के मेल-मिलाप को ही राष्ट्रीयता का रूप देना चाहती है किन्तु देश भक्ति के प्रश्न पर मौन धारण कर लेती है। राष्ट्रीयता का उद्देश्य ही देश भक्ति होता है किन्तु जमाअते-इस्लामी देश-भक्ति को राष्ट्रीयता का अटूट अंग नहीं मानती। जमाअते-इस्लामी का उद्देश्य संसार में हकूमते इलाहिया (कुरान शरीफ द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों पर ईश्वरीय शासन) स्थापित करना है। जमाअते-इस्लामी भारतीय संविधान को मनुष्यकृत विधान मानती है तथा मनुष्यों, मुख्य रूप

से काफिरों और मुश्रिकों द्वारा बनाये गये नियमों के अन्तर्गत जीवन-यापन करने को यह संस्था दासता स्वीकार करती रही है। जमाअते-इस्लामी के नेता मौलाना अबूआला मौदूदी के मतानुसार यदि कोई काफिर हकूमत अपने शासन में मुसलमानों को पूरी धार्मिक स्वतन्त्रता प्रदान कर दे तब भी मुसलमान उस काफिर हकूमत को समाप्त करने तथा हकूमते इलाहिया स्थापित करने के लिये संघर्ष शील रहेंगे।

जमाअते-इस्लामी के अनुसार मोमिनों (मुसलमानों) और काफिरों (मूर्तिपूजकों, नास्तिकों तथा इस्लाम विरोधियों) में एकता की कोई सम्भावना ही नहीं है। पवित्र ईश्वरीय ग्रन्थ कुरान शरीफ में मुसलमानों को साफ शब्दों में आदेश दिया है कि वह काफिरों से कोई सम्बन्ध न रखें। उदाहरण के लिये निम्न आयतें लीजिये:—

" वे जो मुसलमानों को छोड़कर काफिरों को दोस्त बनाते हैं क्या काफिरों के यहां इज्जत चाहते हैं सो इज्जत तो सारी अल्लाह ही की है। खुदा काफिरों को मुसलमानों पर हरगिज जीत न देगा। ईमान वालों को छोड़कर काफिरों को दोस्त मत बनाओ। क्या तुम खुदा का जाहिरा अपराध अपने ऊपर लेना चाहते हो ? कुछ सन्देह नहीं कि काफिर नरक में सबसे नीचे दर्जे में होंगे और तुम किसी को भी इनका साथी न पाओगे।"

(कुरान, सूरे निसा)

उपरोक्त आयतों से स्पष्ट सिद्ध होता है कि खुदा नहीं चाहता कि मुसलमानों और काफिरों में किसी प्रकार भी अच्छे मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध स्थापित हों। ऐसी स्थिति में यदि मौलवी दुर्गाशंकर सत्यार्थी धार्मिक एकत्रीकरण और राष्ट्रीयता का नारा लगायें तो या तो इसे कुफ्र कहा जायेगा या मूर्खता। जमाअते-इस्लामी द्वारा प्रकाशित साहित्य में बराबर इस बात पर बल दिया गया है कि जीवन के हर क्षेत्र में मुसलमान और काफिर का अन्तर प्रकट होता रहे। आचार-व्यवहार, खान-पान, वेश-भूषा, रहन-सहन, भाषा और संस्कृति इन सब में मोमिन और काफिर का भेद प्रकट करना एक सच्चे मुसलमान के लिये नितान्त आवश्यक है। प्रश्न

उठता है कि पवित्र ईश्वरीय ग्रन्थ कुरान शरीफ की उपरोक्त आयतों तथा जमाअते-इस्लामी की उपरोक्त मान्यताओं को स्वीकार करत हुये, क्या भारत में धार्मिक एकत्रीकरण एवं राष्ट्रीयता की संभावना सफल हो सकती है ? मोमिन और काफिर के ईश्वर-प्रदत्त भेद को मिटाकर, सब को एक राष्ट्रीय मच पर लाने का प्रयत्न शेखचिल्ली के कार्यों से कम नहीं माना जायेगा जब तक कि जमाअते-इस्लामी अपने पूर्वाग्रहों से स्वयं को मुक्त नहीं कर लेती। वेदों और कुरान शरीफ में एकेश्वरवाद की समानता स्थापित करने मात्र से राष्ट्रीयता का वातावरण कायम नहीं हो पायेगा। यह एक विवादास्पद विषय है जिस पर मौलवी सत्यार्थी साहब को मेरे पिछले लेखों का उत्तर देना होगा ताकि लोग समझें कि कुरान शरीफ वास्तव में ईश्वरीय ग्रन्थ है और इसमें एकेश्वरवाद को दर्शन, युक्ति और तर्क के आधार पर प्रकटाया गया है या नहीं। निश्चय ही भारत में राष्ट्रीय एकता की नितान्त आवश्यकता है किन्तु इसके लिये धार्मिक एकत्रीकरण की बजाय खुले दिमागों और उदार विचारों की जरूरत है। आवश्यकता इस बात की है कि देश के सभी लोग सामाजिक और सांस्कृतिक आधार पर आदान-प्रदान करें तथा परस्पर तादात्म्य स्थापित करें न कि इस बात की कि विचारों में संकीर्णता और कट्टरपन रखकर हम नीतिवश राष्ट्रीयता का नारा दें। नीतिवश इसलिये कि इन नारों की ओट में इस्लाम के प्रचार और उसकी महानता सिद्ध करने का सहज अवसर प्राप्त होता रहे। राष्ट्रीय एकता के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा जमाअते-इस्लामी के धार्मिक पूर्वाग्रह हैं। जमाअते-इस्लामी बताये कि कुरान-शरीफ की निम्न आयतें क्या धार्मिक एकत्रीकरण और राष्ट्रीय भावनाओं को मजबूत बनाने में सहायक सिद्ध हो सकती है: —

" और अगर अल्लाह पर और पैगम्बर पर और जो किताब उन पर उतरी उस पर ईमान रखते होते तो काफिरों को मित्र न बनाते लेकिन इनमें से बहुतेरे बेहुक्म हैं।" (कुरान, सूरे मायदा)

पवित्र ईश्वरीय ग्रन्थ कुरान शरीफ में साफ उल्लेख है कि काफिरों को मित्र बनाने वाले, ईश्वर के आदेश की अवहेलना करने वाले हैं। यदि ईश्वरीय आदेश के विरुद्ध मौलाना सत्यार्थी साहब तथा जमाअते-इस्लामी काफिरों (इस्लाम के विपरीत मत रखने वालों) से धार्मिक एकता स्थापित करती है तो उन्हें सर्वप्रथम अपने आपको मुनकिर (अस्वीकारी) घोषित करना चाहिये तभी देश में राष्ट्रीयता को बढ़ावा मिल सकेगा।

—•—